Photo by Anant Desai

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

रोकने में व्यस्त!

प्रेषक :
महेन्द्र भंडारी - जोधपुर

देखिए !

ए.वी.एम चित्र

छाया

AVM
PRODUCTIONS

G.H.RAO

संवाद-गीत :
राजेन्द्र कृष्ण

दिग्दर्शन :
हृषिकेश मुखर्जी

संगीत :
सलिल चौधरी

सितम्बर १९६१

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ५० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ६—००

भीनी - भीनी ख़ुश्बू से ताज़गी देने वाला...
Binaca
TALC
नहाने के बाद 'बिनाका' टाल्कम पाउडर का इस्तेमाल
आपको शीतल, ताज़ा और स्वच्छ रखता है।
यह दिन भर पसीने की बदबू को रोकता है, और
इसकी भीनी-भीनी, दिल लुभाने वाली सुगंध
महकती रहती है... महकती रहती है!
CIBA
बिनाका
टाल्क जिसमें दुर्गन्ध-नाशक पदार्थ भी मिला है

ग्राहकों को एक ज़रूरी सूचना

★

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न होगा, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकेगा। पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते की सूचना देनी चाहिए। यदि प्रति न मिले तो १० वीं तारीख से पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक

"चन्दामामा"

‘सात बेटों के बराबर है
मेरा सपूत...’

'कपड़ों की धुलाई को लीजिए तो हमारा मुन्ना सात बेटों के बराबर है—इतने कपड़े मैले करता है वह! लेकिन सनलाइट के कारण मुझे कपड़े धोना बिल्कुल आसान हो गया है।

'सनलाइट जैसे शुद्ध और भरपूर झागवाले साबुन ही से कपड़ों की इतनी अच्छी धुलाई इतने आराम से हो सकती है! फिर इसमें आश्चर्य ही क्या अगर मैं अपनी सारी धुलाई सनलाइट से करती हूँ।'

नईदिल्ली की श्रीमती कमला बाधवानी कहती हैं: घरभर की धुलाई के लिए सनलाइट के समान दूसरा साबुन नहीं।

आप के कपड़ों की सर्वोत्तम सुरक्षा के लिए

हिन्दुस्तान लीवर ने बनाया

S. 31-X29 HI

दक्षिण भारत की प्रसिद्ध सिनी सितारा

टी. कृष्णकुमारी

हमेशा "श्री वेन्कटेश्वर" साडियाँ ही चाहती हैं।

समझदार स्त्रियों द्वारा चाही जानेवाली "श्री वेन्कटेश्वर" रेशमी साडियाँ, सुन्दर रंगों और उत्तम नमूनों के लिए और श्रेष्ठ स्तर के लिए अतुल्य हैं। हर तरह की साडियाँ मिलती हैं। हर अवसर पर वे अपूर्व मनोहर शोभा प्रदान करती हैं। यही नहीं आपके आराम के लिए हमारी दुकान ही एक ऐसी है, जो एयर कन्डिशन्ड है। यहाँ आकर आप सन्तुष्ट होंगे और इसे कभी न भूलेंगे।

श्री वेन्कटेश्वर

सिल्क पॅलेस

स्त्रियों के सुन्दर वस्त्रों के लिए
मनोहर स्थल

284/1, चिक्कपेट, बेन्गलूर - 2.

फोन : 6440

टेलिग्राम : "ROOPMANDIR"

आप भी चाहेंगी
कि 'मेरे भी बाल
ऐसे सुंदर हों!'

मुड़के ज़रा एक नजर देखा। उसके सुंदर बालों की ओर आंखें बरबस खिंच गयीं—दिल में तमन्ना जाग उठी कि मेरे बाल भी ऐसे ही सुंदर होने चाहिए। अनोखी खुशबूवाला 'केशा' बालों के पोषक तत्वों से भरपूर है। इसे इस्तेमाल करने से सुंदर बाल उगते हैं। आप के बालों पर अनोखी बहार आ जाती है—ऐसी बहार जिसकी आप तमन्ना करते हैं।

आज ही अपने बालों
की रक्षा के लिए इस्तेमाल करें

लोमा के उत्पादकों
की एक और बढ़िया भेंट

केशा

एकमात्र एजेंट्स:
एम. एम. खम्भातवाला, अहमदाबाद—१
एजेंट्स:
सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी, बम्बई—२

HIN

सितम्बर १९६१

"चन्दामामा" की कहानियों को पढ़ने से तथा सुन्दर रंगीन चित्रों को देखने से कभी-कभी मुझे स्वप्न में भी उनकी आकृतियों का प्रदर्शन हो जाता है, फिर पढ़ने पर तो समझिये कि कितना रसस्वादन होता होगा। तथा मैंने जब से "चन्दामामा" पढ़ना आरम्भ किया है उसी समय से मैं वर्ग में सर्व प्रथम आता हूँ।

हरीशचन्द्र नागपाल, राँची

हमारे घर में आप का चन्दामामा लगभग छः साल से आता है और पता नहीं कब तक चलता रहेगा क्योंकि हमारे सारे घर में सबको यह इतना पसन्द है कि हम चाहे कहीं भी हो मगर जब तक नया चन्दामामा अगर वह प्रकाशित होकर बाज़ार में आ जाए न पढ़ लें दिल को चैन ही नहीं पड़ता। कई बार सोचा कि हम तो अब बड़े हो गए हैं, यह तो सिर्फ़ माँ-बच्चों का पत्र है, हमें इसे छोड़ देना चाहिए। मगर यह हम से नहीं छुटता, इसलिए हम इसी निश्चय पर पहुँचे हैं कि यह सिर्फ़ माँ-बच्चों का नहीं बल्कि सबका पत्र है। आप से प्रार्थना है आप इस पर माँ-बच्चों का मासिक पत्र न लिखा करें।

महेन्द्रपाल गुप्ता, अम्बाला

हम चन्दामामा की हर प्रति लगभग आठ साल से पढ़ रहे है। हमें चन्दामामा की प्रति में पूरी रुचि है। मनोरंजन एवं ज्ञान से पूरी कहानियाँ मन को मोह लेती है। जहाँ तक हम समझते हैं भारत में इस पत्रिका के मुकाबले में कोई और पत्रिका मिल ही नहीं सकती।

मृदुला अग्रवाल, दिल्ली

यद्यपि यह पत्रिका विभिन्न प्रकार से सुसज्जित की जाती है, तब भी बिना हास परिहास स्तम्भ के इस पत्रिका में एक प्रकार का अखरन सा महसूस होता है।

दुर्गाप्रसाद रस्तोगी, बाराबंकी

"चन्दामामा" के प्रत्येक स्तम्भ ज्ञानपूर्ण होते हैं। इसके विषय में यहीं कहना ज्यादा होगा कि हिन्दी क्षेत्र में प्रगति करने का सर्वोत्तम माध्यम है।

बैजनाथ प्रसाद, पटना

मैं मुक्त कंठ से यह कह सकता हूँ कि चन्दामामा वर्तमान भारत की सबसे अच्छी मासिक पत्रिका है। इसमें जो सुरूची पूर्ण कहानियाँ दी जाती हैं। वैसी कहानियाँ और किसी भी पत्रिका में नहीं दी जाती हैं।

इसमें जो चित्र सब छपते हैं। वे चित्र इतने अच्छे होते हैं कि उन्हें जितने बार देखता हूँ, उतने बार और देखने की इच्छा होती है। चित्राजी के बनाए हुए चित्र मुझे अधिक पसन्द हैं और आजकल जो बालकाण्ड के चित्र शंकर बनाते है, उसकी तो बात क्या कहना!

रमाकान्त मिश्र, जमशेदपुर

आप "चन्दामामा" में छपी ४-१० वर्ष पुरानी कहानियाँ फिर से 'चन्दमामा' में क्यों नहीं छापते, जिससे नये पाठक भी उन कहानियों का आनन्द उठा सकें?

एन. एस. अपार, इन्दौर

मुझे तो इतना ही कहना काफ़ी है कि जो पाठक इस मासिक पत्रिका को पढ़ते रहेगें, उनका जीवन सुधर कर समाज में आदर्श बन जायेगा। यह पत्रिका बच्चों के कोमल हृदय से लेकर युवकों, वृद्धों के दृढ़ हृदय में भी सदाचार प्रसन्नता ही नहीं बल्कि वीरता की भावनायें भी उत्तेजित करती है।

राजेन्द्रप्रसाद "आजाद" नीरपुर

गठियावात ?

जरा-सा **अमृतांजन**

आपको तुरन्त आराम पहुंचायेगा

बारबार की खांसी और सर्दी से जीवनशक्ति कम होती है.... फेफड़े की बीमारी को रोकने की ताकत घटती है।

खांसी और सर्दी कष्टकर ही नहीं बल्कि उनके बारबार सताने के कारण प्रचण्ड बीमारी का होना संभव है। इसलिये सावधान रहिये। वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड का सेवन करना शुरू कीजिये।

वाटरबरीज कम्पाउन्ड

- ★ खांसी ग्रौर फेफड़े की तकलीफोंसे आराम पहुंचाता है।
- ★ खून की पुष्टि करता है।
- ★ खांसी ग्रौर सर्दी-जुकाम का मुकाबला करने की ताकत देता है।
- ★ शरीर के सभी अवयवों को स्फूर्ति देता है।

क्रियोसोट तथा गुयेकाल युक्त, वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड फेफड़े की तकलीफों को हटाकर खांसी ग्रौर सर्दी को खोल देता है। सारे शरीरको स्वस्थ बनाकर बीमारी से बचते रहने की ताकत पैदा करता है ग्रौर हमेशा तन्दुरुस्त बनाये रखता है। बच्चे ग्रौर बूढ़ों के लिये समान रूपमें गुणकारक है।

तन्दुरुस्त बने रहने के लिये सुस्वादु

वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड

(लाल रंगीन लेबल)

लीजिये

केसरी रंगीन लेबल का वाटरबेरीज़ विटामिन कम्पाउन्ड भी प्राप्त है जो भेक प्रसिद्ध टॉनिक है

वार्नर-लैम्बर्ट फार्मस्यूटिकल कम्पनी (सीमित दायित्व के साथ यू. एस. ए. में संस्थापित)

W-191

स्काउट के गौरव...
...की रक्षा रमेश द्वारा प्रतिस्पर्धात्मक ढंग से की जाती है। चाहे यह पड़ोस में आग बुझाने के काम में सहायता करना हो, चाहे खतरनाक गाड़ियों के बीच से अंधों एवं अपंगों को सड़क पार कराने का काम हो, रमेश हमेशा ही बहादुरी पूर्वक अच्छे अच्छे कामों द्वारा स्काउट के गौरव की रक्षा करता है...साठे के खस्ते बेहतरीन बिस्कुट दिन भर उसे चुस्त एवं प्रसन्न चित्त रखने में सहायक रहते हैं।
IS:1011
ISI
साठे बिस्कुट
साठे बिस्कुट एण्ड चॉकलेट कं. लि., पूना-२
hēros'-SBC-126 A HIN

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

"चन्दामामा" में हम बहुत-सी धारावाहिक कथायें प्रकाशित कर चुके हैं। इनमें से एक–"विचित्र जुड़वा" पुस्तकाकार में भी आ चुकी है।

पाठकों के कई प्रश्न आ रहे हैं कि बाकी धारावाहिक उपन्यास कब पुस्तकाकार में प्रकाशित होंगे।

फिलहाल कागज़ की बहुत तंगी है और भी कई असुविधायें हैं। इसलिए हमारे लिए निकट भविष्य में इनको पुस्तक रूप में प्रकाशित करना कदाचित् सम्भव न होगा।

हम जानते हैं कि यह जानकर बहुत से उत्सुक पाठक निराश होंगे। आशा है कि वे हमारी विवशता समझेंगे।

वर्तमान परिस्थितियों में यही अच्छा है कि पाठक चन्दामामा की प्रतियों को सुरक्षित रखें।

वर्ष : १३ सितम्बर १९६१ अंक : १

गंगा-स्नान का फल

एक गाँव में एक नादान ब्राह्मण गृहस्थी रहा करता था। उसने एक दिन कोई पाप कार्य किया। उसने जब बड़े बुजुर्गों से पूछा कि उसका क्या प्रायश्चित्त था—तो उन्होंने बताया कि यदि वह आजीवन गंगा स्नान करता, परमात्मा का ध्यान करता रहा तो पाप निवारण सम्भव था।

इसलिए, ब्राह्मण अपनी सारी सम्पत्ति अपने लड़के को देकर, बोरिया-बिस्तर लेकर गंगा को ढूँढता निकला।

जाते जाते उसको एक नाला दिखाई दिया। उस बावले ब्राह्मण ने उसको ही गंगा समझा। उस में स्नान करते और उसके किनारे भगवान का भजन करते उसने पाँच साल बिता दिये।

एक दिन उस तरफ एक शिवभक्त सन्यासी आया। उसने ब्राह्मण से पूछा—"भाई, यहाँ क्या कर रहे हो?"

इस पर ब्राह्मण ने कहा—"स्वामी, मैंने अनजाने एक बड़ा पाप किया था, उसका निवारण करने के लिए मैं गंगा के किनारे ध्यान कर रहा हूँ।"

"क्या इस नाले को गंगा समझ रहे हो?" सन्यासी ने पूछा।

"स्वामी, क्या यह गंगा नहीं है?" ब्राह्मण ने पूछा।

सन्यासी ने जोर से हँसकर कहा—"अरे गंगा कहाँ है, और यह नाला कहाँ है? दीमकों वाली बाम्बी कहाँ है और कहाँ मेरु पर्वत है? मैंने सपने में भी न सोचा था कि तुम-सा बावला कहीं होगा।

महाजन

गंगा यहाँ से सैकड़ों मील दूर है।" उसने परिहास करते हुए ब्राह्मण को यह सब बताया।

"स्वामी, आपने मेरा उपकार करके बड़ा पुण्य कमाया है।" ब्राह्मण ने सविनय उससे कहा।

वह अपनी लाठी-वाठी लेकर, चलता चलता एक छोटी नदी के किनारे पहुँचा।

ब्राह्मण ने सोचा कि वह अवश्य गंगा थी। वह बड़ा खुश हुआ। उस में स्नान करते, उसके किनारे भगवान का भजन करते फिर उसने पाँच साल और बिता दिये।

तब उस तरफ एक अघोरी आया। उसने ब्राह्मण से पूछा—"अरे तुमने इस अनाम-मामूली नदी के किनारे पाँच साल तपस्या करते बिता दिये? कितने पागल हो तुम! यदि यह तुम गंगा के किनारे करते, तो तुम्हें कितना पुण्य मिलता। तुम मुक्त हो जाते।"

ब्राह्मण हँसा—"यह क्या स्वामी! क्या यह भी गंगा नदी नहीं है?" उसने अचरज करते हुए पूछा।

"यह गंगा? क्या लोमड़ी कभी शेर हो सकती है! गंगा और इस नदी में कुछ भी तो समानता नहीं है।" अघोरी ने कहा।

"स्वामी आप इधर आये—बड़ा अच्छा रहा। आपने मुझे यह बताकर पुण्य कमाया है।" यह कह ब्राह्मण अपनी चीज़ें लेकर फिर चल पड़ा। चलता चलता, कुछ दिनों बाद वह नर्मदा नदी के किनारे गया।

"यह अवश्य गंगा है।" यह सोच कर वह वहीं रह गया। नदी में स्नान करते हुए, तट पर तपस्या करते उसने वहाँ भी पाँच साल काट दिये।

तब उस तरफ वहाँ एक यात्री आया। जहाँ ब्राह्मण बैठा था वहाँ उसने नदी में फूल छोड़े। उसको "नर्मदा" सम्बोधित करके वह स्तोत्र पढ़ने लगा।

ब्राह्मण ने यात्री के पास आकर पूछा—"इस नदी का नाम क्या है?"

"यह महा पवित्र नर्मदा नदी ही तो है; क्या आप यह बात सचमुच नहीं जानते?" यात्री ने ब्राह्मण से पूछा।

ब्राह्मण ने निश्वास छोड़कर कहा—"आपने मेरा बड़ा उपकार किया है।" वह अपनी चीज़ें बटोर कर वहाँ से निकल पड़ा।

परन्तु अब ब्राह्मण की सारी शक्ति क्षीण हो गई थी। घर छोड़े उसे पन्द्रह साल हो गये थे। उम्र ढल गई थी। तपस्या के कारण शरीर सूख गया था। इसलिए यात्रा उसको बड़ी कष्टमय लगी। दिन में तेज धूप रहती। कमज़ोरी के कारण पैर जल्दी उठते भी न थे। परन्तु वह पड़ाव करता चलता गया। आखिर ऐसी स्थिति आयी कि वह चल भी न सका। फिर भी वह रेंगता-बेंगता चलता रहा।

वह अपनी सारी शक्ति लगाकर खिसकता-खिसकता एक टीले पर पहुँचा। वहाँ से उसने गंगा नदी देखी। गंगा में स्नान करनेवाले असंख्य यात्रियों को देखा। ब्राह्मण का मन बल्लियों उछलने लगा। वहीं उसने प्राण त्याग दिये।

यम के दूत उसको यमराज के पास ले गये।

"इस आदमी ने क्या क्या पाप किये हैं?" यम ने चित्रगुप्त से पूछा।

"इसने एक ही एक पाप किया। परन्तु पन्द्रह वर्ष गंगा में स्नान करने के कारण उसका भी निवारण हो गया है।" चित्रगुप्त ने कहा।

दक्ष-यज्ञ

द्वितीय अध्याय

गया दक्ष घर को गुस्से से
थर-थर कंपित गात,
पूछा पत्नी ने विस्मित हो—
"अरे, हुई क्या बात?"

बोला दक्ष—"कहूँ क्या तुमसे
पूछो मत कुछ हाल,
जामाता शिव के कारण ही
हुआ आज बेहाल।

आदर मेरा करते ब्रह्मा
झुकते हैं दिकपाल,
सकल प्रजा का मैं प्रतिपालक
अनुचर तीनों काल।

इस पगले शिव की क्या हस्ती
तोड़ूँगा अभिमान।
यज्ञ-सभा में उसने मेरा
किया आज अपमान।

मिले न हिस्सा उसे यज्ञ में
दिया यही है शाप,
फल अपनी करनी का वह यों
भोगे अब चुपचाप!"

सुन पति की यह निष्ठुर वाणी
पत्नी मौन रही,
जामाता को शाप! सोच यह
दुख से मौन रही।

किंतु दक्ष तो थे गुस्से में
खोकर ज्ञान विवेक,
यज्ञ उन्होंने भी फौरन ही
ठाना आखिर एक।

जामाता थे उनके जितने
शिवशंकर को छोड़,
बुलवाया उनको दे न्योता
करने शिव से होड़।

"भारतीभक्त"

सकल देवता-मुनियों को भी
मिला निमंत्रण-पत्र,
एक-एक कर वे सारे ही
होने लगे एकत्र।

देखा शिव को नहीं वहाँ जब
हुआ उन्हें आश्चर्य,
देख दक्ष का रंग-ढंग वे
समझ गये तात्पर्य।

दिव्य वाहनों पर थे सुरगण
नभ से उतर रहे,
मानों सब नक्षत्र गगन से
भूपर उतर रहे।

पूरब-पश्चिम-दक्षिण से तो
आये नाना देव,
किंतु न आये उत्तर से ही
देवों के जो देव!

कैलास-शिखर से देख रही थी
सती सभी व्यापार,
चकित भाव से वह यों मन में
करने लगी विचार—

यज्ञ पिता के घर है होता
मिला नहीं संवाद,
हुई भला क्या बात कि हमको
रख न सके वे याद!

फिर वह गयी जहाँ पर थे शिव
बैठे पल थी मार,
मुस्काये वे देख प्रिया को
भर आँखों में प्यार।

पूछा—"प्रिये, बहुत ही तुम तो
लगती आज प्रसन्न,
क्या कारण है सभी अचानक
तुम हो उठी प्रसन्न?"

सुन यह वचन सती का मुख झट
हुआ लाज से लाल,
बोली पति से वह आँखों में
मादकता-रस ढाल—

"ससुर आपके यज्ञ कर रहे
सुनें आप हे नाथ?
गये देवता सभी वहाँ हैं
बंधु-मित्र के साथ।

हम भी वहाँ चलेंगे कब प्रभु,
बैठे क्यों चुप आप?"
कहकर सती लगी देखने
शिव का मुख चुपचाप।

शांतभाव से बोले शिव तब
देख प्रिया की ओर—
"पता नहीं है कुछ भी तुमको
करो नहीं यों जोर।

तुम तो खुश हो विहँस रही हो
पर न जरा यह ध्यान,
पिता तुम्हारे चाह रहे हैं
मेरा हो अपमान।

क्यों न बुलाया हमें यज्ञ में
इसे प्रिये, लो जान,
छोड़ो बात वहाँ जाने की
जहाँ न हो सम्मान।

प्रिय पुत्री होने का तुमको
है मिथ्या अभिमान,
क्योंकि पिता ने किया तुम्हारे
पति का ही अपमान।

दिया मुझे है शाप उन्होंने
दिखलाया है क्रोध,
किया न मैंने प्रणाम उनको
उसका यह प्रति शोध।

बसते हैं सब प्राणिमात्र के
उर में तो भगवान,
नहीं तुम्हारे पिता दक्ष को
इतना भी है ज्ञान।

खैर, क्रोध तो था मुझपर ही
तुम पर क्यों है रोष,
बुला भेजते तुमको ही यदि
तो होता संतोष!"

कहा सतीने विनय भाव से
सुनकर यह—"हे नाथ!
मान नहीं कर सकती बेटी
कभी पिता के साथ।

जनमी और पली जिस घर में
उसे न सकती भूल,
जाने में संकोच वहाँ क्या
वह तो सुख का मूल।

अनुमति मुझको आप दीजिए
करूँ अभी प्रस्थान,
यज्ञ देखकर आ जाऊँगी
करती प्रभु का ध्यान।"

बोले शिव इसपर यह वाणी—
"जाती हो तो जाओ,
जोहूँगा मैं बाट तुम्हारी
कुशल सहित घर आओ।

बिना बुलाये जाने से तो
होगा ही अपमान,
और अगर अपमान हुआ तो
होगा मरण समान।"

इतना कहकर शिवजी तत्क्षण,
हुए ध्यान में लीन,
सती चली तब पिता-गेह को
लिये उमंग नवीन।

जाते देख अकेली उनको
नंदी हुआ सचेत,
वह भी चला गणों को करके
आने का संकेत।

आगे आगे सती मौन थी
कदम बढाती जाती,
शोर मचाते पीछे पीछे
चली गणों की पाँती।

[२]

[ब्रह्मापुर के पास के जंगल में केशव नाम का एक किसान लड़का रहा करता था। वह जब पहाड़ के पास अपनी गौ भैंसों को चरा रहा था, तो एक विचित्र जन्तु वहाँ आया। तभी ब्रह्मापुर का सेनापति वहाँ शिकार के लिए आया हुआ था। उसने उस विचित्र जन्तु को देखकर उसको अपने पास हाँक लाने के लिए अपने सैनिकों को आज्ञा दी।]

सेनापति की आज्ञा सुनते ही सैनिकों में से एक ने अपने घोड़े को अद्भुत जन्तु के पीछे भगाया। उसे सेनापति की ओर हाँका।

सेनापति ने उसकी ओर बिना पलक झपकाये कुछ देर तक देखा, फिर कहा—"यह कोई विचित्र जन्तु है। संसार में इस तरह का कोई और जन्तु होगा, यह विश्वास नहीं किया जा सकता। राजा को यह यदि भेंट में दिया गया तो वे बहुत सन्तुष्ट होंगे।"

फिर उसने केशव की ओर मुड़कर पूछा—"अबे, तुमने यह विचित्र जन्तु कहाँ से चुराया है! क्या तुम यह नहीं जानते कि खजानों की तरह इस तरह के विचित्र जन्तु भी राजा के हैं। तुमने इस बारे में राजा की आज्ञा नहीं सुनी!"

सेनापति की ये बातें सुनकर केशव को बड़ा गुस्सा आया। परन्तु उसने उसे व्यक्त नहीं किया।

उसने कहा—"हुज़ूर, मैंने इस जन्तु को कहीं नहीं चुराया है। मुझे पहाड़ पर जब यह बचा था, तब यह मिला। इसे मैंने पालकर बड़ा किया। यह हमेशा हमारी गौ भैंसों के साथ घूमता रहता है। मैं पढ़ना लिखना नहीं जानता। और मैं कभी इस जंगल को छोड़कर कहीं नहीं गया हूँ। इसलिए मैं राजा की आज्ञा के बारे में भी कुछ नहीं जानता।"

"यदि यह बात है तो मैं तुम्हें माफ़ कर देता हूँ। अरे, उसके गले में रस्सी बाँधकर नगर की ओर लाओ।" कहकर सेनापति ने जल्दी जल्दी अपना घोड़ा आगे बढ़ाया।

सैनिकों में से एक ने रस्सी का एक फन्दा बनाकर विचित्र जन्तु के गले में डाला। उसके कसते ही उसने रस्सी के सिरे को अपने घोड़े की जीन से बाँध दिया। वह फिर सेनापति के पीछे पीछे चलने लगा।

दूसरे सैनिक ने केशव के पास आकर तलवार निकालकर कहा—"खबरदार, मैं फिर एक महीने में इस तरफ़ आऊँगा। इस बार यदि जल्दी एक और गधे को पकड़कर मुझे न दोगे तो तुम्हारी खैर नहीं है।" वह भी पहिले सैनिक के पीछे चला गया।

सेनापति और उसके सैनिकों का व्यवहार देखकर केशव खौल उठा। उसने तरकश में से एक तीर निकाला, धनुष पर चढ़ाया भी। फिर यह सोचकर—"चाहे कोई बड़ा शत्रु ही हो, उसपर पीछे से बाण नहीं छोड़ना चाहिए।" उसने अंगुलियों के बीच में से बाण धीमे से नीचे छोड़ दिया।

सैनिक उसके पीछे विचित्र जन्तु को ला रहे थे और आगे आगे जंगल में रास्ता निकालता ब्रह्मपुर का सेनापति खुशी से फूला न समाता था।

"मैं इस जन्तु को राजा को दिखाऊँगा, बताऊँगा कि उसको पकड़ने के लिए मुझे क्या क्या साहसिक कार्य करने पड़े थे। राजा खुश होकर मुझे बड़े बड़े ईनाम देंगे....वह यों हवाई किले बना रहा था।

नगर में यह किसी को नहीं मालूम होना चाहिए था कि मैं एक किसान लड़के को डरा धमकाकर इस जन्तु को पकड़ लाया हूँ। इसलिए मुझे पहिले ही अपने सैनिकों को सावधान करना होगा।"

यह सोच वह अपनी चाल कम करके सैनिकों को बताने के लिए घोड़ा रोककर पीछे मुड़ने ही वाला था कि यकायक पीछे से सैनिक का चिल्लाना सुनाई पड़ा। "हुज़ूर, यह तो कोई राक्षस घोड़ा मालूम होता है। मेरे घोड़े को पेट पर चोट मारकर इसने मार दिया है। मुझे भी...." वह जोर से रोने लगा।

सेनापति ने घबराते हुए पीछे की ओर देखा। एक सैनिक और उसका घोड़ा खून में छटपटा रहे थे। दूसरा सैनिक घोड़ा छोड़कर जंगल में भागा जा रहा था।

सेनापति डर के कारण काँप रहा था, घोड़े को आगे बढ़ाना चाहता था कि विचित्र जन्तु ने अपना सींग उस घोड़े के पेट में घुसेड़ा। घोड़ा हिनहिनाता एक तरफ़ गिर गया। उसपर से सेनापति कूदा, पर इससे पहिले कि वह ज़मीन पर गिर सका, विचित्र जन्तु ने उसकी रीढ़ पर जोर से चोट की।
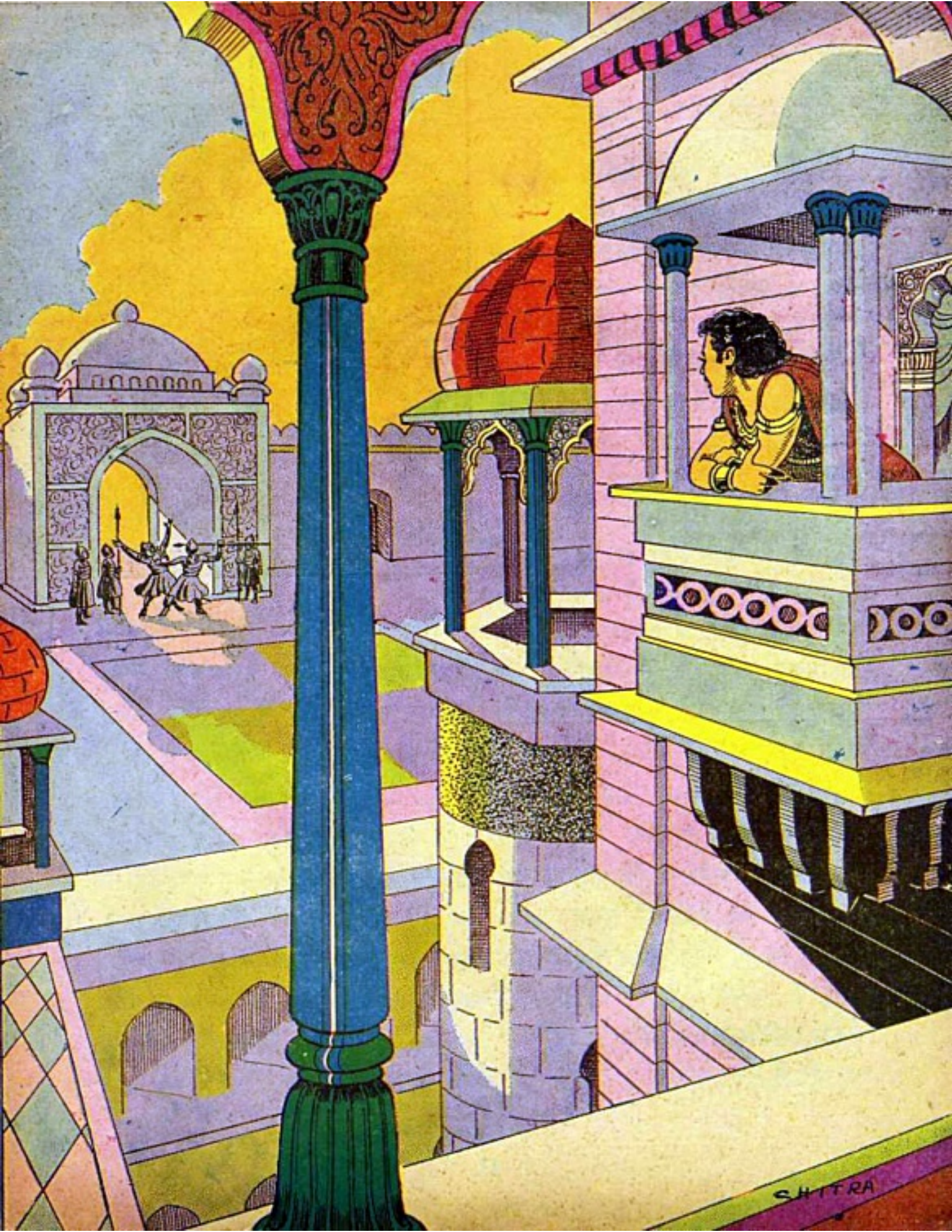
CHITRA

"बचाओ बचाओ, राक्षस घोड़ा" चिल्लाता चिल्लाता, बचा हुआ सैनिक ब्रह्मपुर पहुँचा।

जब लोगों ने घंटापथ पर उसको यों चिल्लाता भागता देखा, तो उन्होंने सोचा कि वह पागल हो गया था।

वह जब किले के फाटक पर पहुँचा, तो वहाँ के पहरेदारों से उसने कहा—"हमारा सेनापति मारा गया है। घोड़ा मारा गया है। साथ का सैनिक भी मारा गया है उसका घोड़ा भी। वह राक्षस घोड़ा सब को नोंच नोंचकर खा जायेगा।" वह जोर जोर से चिल्लाया।

पहरेदारों के सरदार ने मन्त्री से कहा—"लगता है, यह पागल हो गया है। चिल्ला रहा है कि सेनापति को जंगल में एक सींगवाले राक्षस घोड़े ने मार दिया है।"

"यह बात है, तो उसे मेरे कमरे में भेजो।" कहता मन्त्री अपने कमरे में चला गया।

सैनिक जैसे ही दरवाजे के पास आया तो मन्त्री ने हँसते हुए उसकी ओर हाथ हिलाया—"बिना डरे जो कुछ हुआ है, उसे बताओ।"

सैनिक कुछ सम्भला। जंगल में कैसे उनको किसान का लड़का केशव दिखाई दिया था, कैसे सेनापति ने विचित्र जन्तु को उससे लिया था, फिर उसने रास्ते में कैसे सैनिक को, बाद में सेनापति को मारा था और कैसे वह भागकर आया था—सब विस्तारपूर्वक सुनाया।

मन्त्री कुछ समय तक सोचता रहा। "यानि जब उन दोनों को विचित्र जन्तु मार रहा था तो तुम हाथ बाँधे देखते दूर खड़े रहे। क्या तुम डरे नहीं?"

सैनिक का जवाब सुनकर मन्त्री हँसा। "लगता है, तुमने जंगल में कोई जहरीला फल खालिया है। यदि सेनापति सचमुच मर गया है तो उसका कारण जैसा कि तुम बता रहे हो, नहीं है। वैसा विचित्र जन्तु संसार में कहीं नहीं है। वह किसान का लड़का जिसका नाम तुम केशव बता रहे हो, वह धनुष-बाण चलाना जानता है न! कुछ सैनिकों को जंगल में भेजकर मैं मालूम कर लूँगा कि आखिर हुआ क्या है। तुम उनको रास्ता दिखाओ।" उसने कहा।

"डर! मेरे ऊपर के प्राण ऊपर ही रह गये हुज़ूर! ज्योंही मेरे साथ के सैनिक को मारने के लिए वह विचित्र जन्तु लपका तो मैं जंगल में बिना आगे पीछे देखे भाग निकला।" सैनिक ने कहा।

"यानि, तुमने सेनापति का मरना अपनी आँखों नहीं देखा?" मन्त्री ने उसे गौर से देखते हुए कहा।

"हुज़ूर, आँखों से तो नहीं देखा, तो क्या? मैंने सेनापति का यह चिल्लाना सुना है—"मर रहा हूँ, बचाओ!" सैनिक ने कहा।

"जो हुक्म हुज़ूर...." सैनिक ने सिर हिलाया। परन्तु जंगल का नाम सुनते ही उसका दिल धक धक करने लगा। फिर भी वह मन्त्री की आज्ञा का उलंघन नहीं कर सका।"

मन्त्री ने पहरेदारों के सरदार को बुलाकर आज्ञा दी कि जंगल में तुरत सेनापति को ढूँढा जाय।

इस बीच शहर में सेनापति की मृत्यु के बारे में तरह तरह की अफवाहें उड़ने लगीं। तरह तरह के अनुमान किये जाने लगे।

राजपथ पर सैनिक का चिल्लाना बहुत-से लोगों ने सुना था। यह भी सुना गया कि कोई विचित्र जन्तु है जिसके सिर पर एक सींग है। जिसके बड़े बड़े पर हैं। जंगल में सेनापति को, जो वहाँ शिकार खेलने गया हुआ था, पकड़कर आकाश में जाने कहाँ उड़ गया है।

शहर में जब केशव का पिता दूध बेचने आया तो उसने भी ये सब अफवाहें सुनीं।

उसे, रात को उसके लड़के ने विचित्र जन्तु के बारे में जो कुछ बताया था, वह सब याद हो आया। वह क्रूर जन्तु जिसने सेनापति को मार दिया था, क्या वह उसके लड़के को नहीं मारेगा? वह यह सोच सोचकर दुःखी होने लगा।

बूढ़ा इसी फ़िक्र में रहा। वह शहर से जल्दी जल्दी घर भागा।

वह जब नगर का द्वार से जा रहा था तो उसको एक और विचित्र बात सुनाई दी। वह यह कि जंगल में एक शत्रुदेश के गुप्तचर ने, जो पशुओं के चराने के बहाने वहाँ रह रहा था, सेनापति को और उसके साथ के सैनिकों को मार दिया था। उसको, यदि सम्भव हो तो जीते जी पकड़कर लाने के लिए मन्त्री कुछ सैनिक भेज रहे हैं। और वे जंगल की ओर जा रहे हैं।
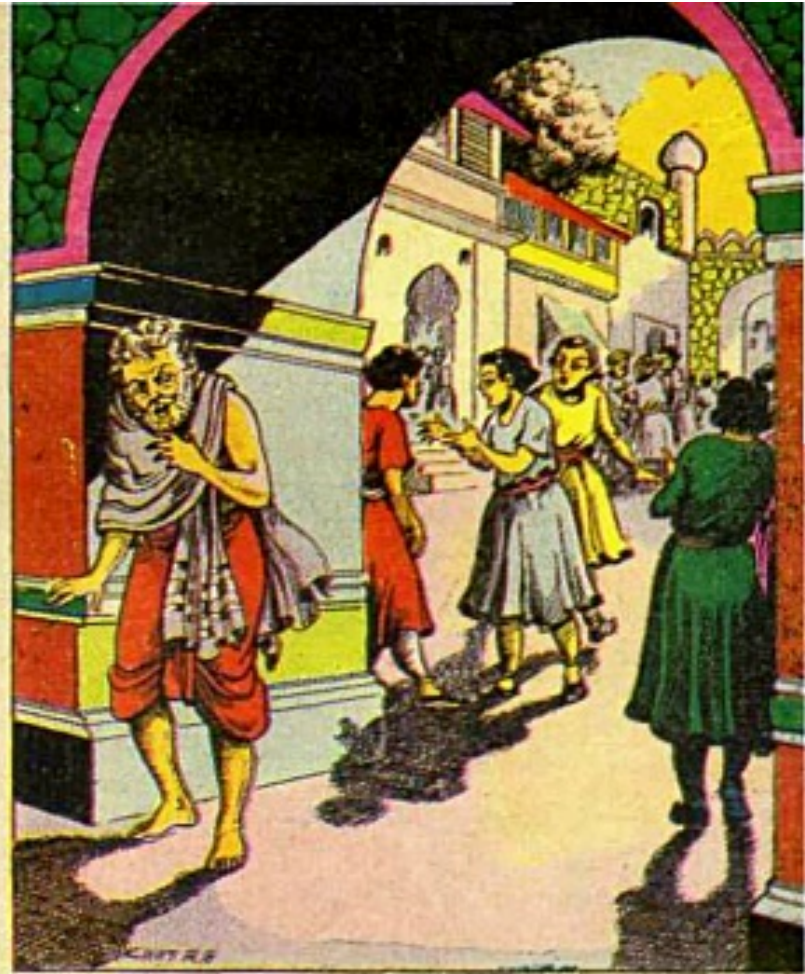
यह सुनने के बाद बूढ़े को लगा कि सचमुच उसके पुत्र पर आपत्ति आनेवाली थी।

यदि अब तक उसने विचित्र जन्तु को न मार दिया होगा तो ये मन्त्री के भेजे हुए बे-अक्ल सैनिक उसको गुप्तचर समझकर

मार देंगे। मुझे पहिले ही जाकर जल्दी मालूम करना होगा कि वहाँ की परिस्थिति कैसी है और अपने लड़के को सावधान करना होगा।

बूढ़ा जैसे तैसे जंगल में अपने झोंपड़े के पास पहुँचा। वहाँ कोई नहीं था। उसका लड़का न था।

उसने सोचा कि जाने क्या हो, दीवार पर से तलवार, जो उसके पिता के ज़माने की थी, उसने ली और उस जगह गया जहाँ उसका लड़का गौ भैंस को चराया करता था।

केशव को, रोज़ जहाँ बैठता था, वहाँ पेड़ के नीचे बैठा देख उसकी जान में जान आ गई। वह भागा भागा लड़के के पास गया। "केशव, मालूम नहीं तुम्हें जीता जी देख सकूँगा कि नहीं। शहर में बहुत-सी अफवाहें उड़ रही हैं। आखिर, यहाँ हुआ क्या है?"

पिता की घबराहट और उसके हाथ में तलवार देखकर केशव को बहुत आश्चर्य हुआ। नगर में क्या क्या अफवाहें उड़ रही थीं, वह न समझ सका। उसने पिता की ओर स्थिर होकर देखते हुए पूछा—"तलवार क्यों लाये हो? अफवाहें क्या हैं?"

"ब्रह्मापुर के सेनापति को और उसके सैनिक को किसी विचित्र जन्तु ने मार डाला है, शहर में अफवाह उड़ी है। कुछ और लोग कह रहे हैं कि शत्रुदेश के गुप्तचर ने जो वेष बदलकर यहाँ घूम रहा है, उनको मार दिया है।" पिता ने घबराते हुए कहा।

(अभी है)
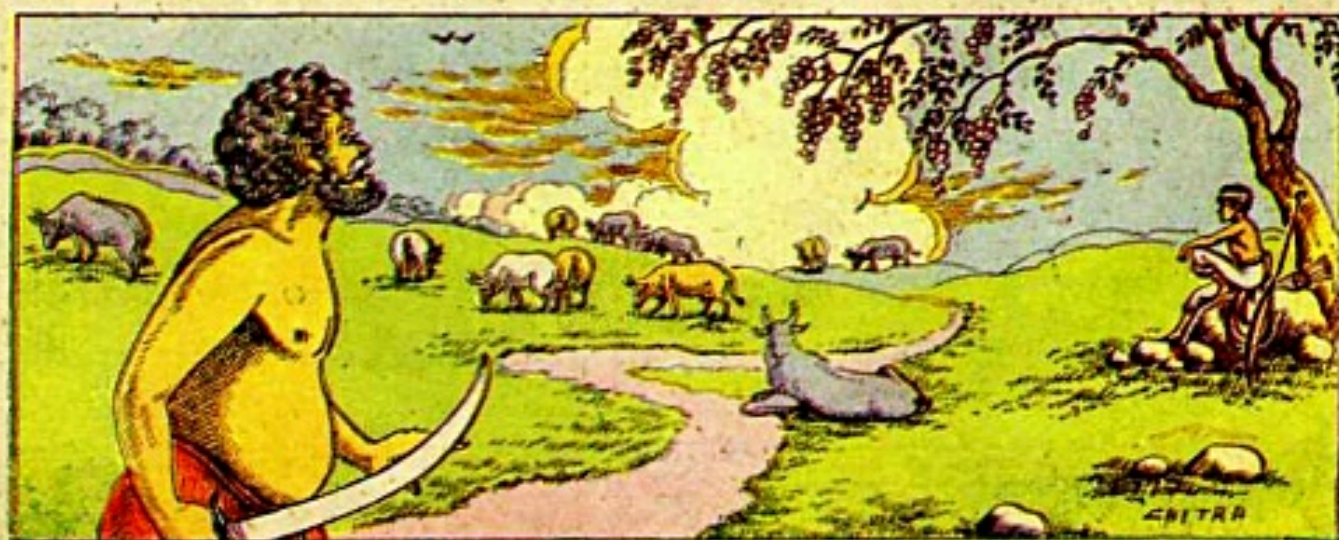
निरुत्तर प्रश्न

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। पेड़ के पास जाकर, शव उतार कर कन्धे पर डाल, पहिले की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, कई के लिए उनकी शक्ति सामर्थ्य ही विघ्न हो जाते हैं। इसके तुम स्वयं ही उदाहरण हो। जो मैं प्रश्न पूछता हूँ, उनके उत्तर देने में तुम्हारा कार्य ही खराब होता है, तुम्हें कोई लाभ नहीं होता। तुम्हारी तरह नागराज की लड़की भी सब प्रश्नों का उत्तर दे सकती थी। परन्तु इसके कारण उसकी विजय हुई। इस आधी रात के समय तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिए बहुत विचित्र अनंग राग की कहानी सुनाता हूँ।" उसने यों कहानी सुनानी शुरू की।

किसी जमाने में सूर्यकान्त नाम का राजा हुआ करता था। उसने अपने बल

और पराक्रम से, चार समुद्रों के बीच की भूमि जीत ली थी। अपने बुद्धि बल से सकल शास्त्रों का अध्ययन किया। वह कामदेव-सा सुन्दर था, इसलिए उसने अपने राज्य की स्त्रियों का मन भी जीत लिया था। परन्तु कोई स्त्री ऐसी न थी, जो उसके मन को विचलित कर सकती थी।

उसके मन्त्रियों को यह देख चिन्ता हुई कि राजा किसी स्त्री की ओर नजर उठाकर भी न देखता था। विवाह करने की भी चिन्ता उसमें न थी। राजा ने विवाह करके यदि बच्चे न पैदा किये, तो उसके बाद राज-सिंहासन पर कौन बैठेगा? मन्त्रियों ने आपस में सोचा, जैसे भी हो राजा का ध्यान विवाह की ओर आकर्षित करना होगा। इसलिए वे राज्य के कोने कोने से सुन्दर कन्यायें लाये और उनको किसी बहाने राजा के सामने ले भी गये।

पर इससे भी कोई फायदा न हुआ। इतनी सब सुन्दरियों को देखने पर भी सूर्यकान्त महाराजा का मन नहीं बदला। यह देख मन्त्रियों की चिन्ता और बढ़ी। राजा के पास जाकर कहा—"महाराज! यदि आपने जल्दी विवाह न किया और आपके लड़का न पैदा हुआ, तो देश का भविष्य नहीं है। अराजकता फैल जायेगी।" राजा ने उनकी न सुनी।

मन्त्रियों को न सूझा कि क्या किया जाये, राजा से कहे बगैर ही उन्होंने एक घोषणा करवा दी। वह यह कि जो कोई राजा को विवाह करने के लिए मना देगा, उसको करोड़ सोने की मुहरें दी जायेंगी। यह घोषणा सुनते ही, कुछ दुष्ट वैद्य, जड़ी, बूटी, ताबीज वगैरह, लेकर आये। उनके प्रयत्न तो असफल ही रहे और राजा के मन में स्त्रियों के प्रति घृणा भी पैदा हो गई।

फिर राजाने आज्ञा निकलवाई, जो कोई स्त्री उसकी नजरों में पड़ेगी, उसको देश निकाला दिया जायेगा। मन्त्रियों की आशाओं पर पानी फिर गया।

इस हालत में कोई चित्रकार कहीं से आता, सूर्यकान्त महाराजा के नगर में पहुँचा। उसने उस नगर की प्रजा से पूछा—"तुम्हारे नगर का क्या हालचाल हैं!" लोगों ने कहा—"बस एक ही बात है, हमारे राजा को स्त्री की छाया भी पसन्द नहीं है। शादी नहीं कर रहे हैं। मन्त्री यह माथापची कर रहे हैं कि कैसे उनकी शादी की जाये।"

यह सुन चित्रकार जोर से हंसा। "तुम्हारे राजा का मन मैं एक क्षण में बदल सकता हूँ।"

उसकी ये बातें गुप्तचरों द्वारा मन्त्रियों के पास पहुँची। उन्होंने जाकर यह मन्त्रियों से कहा। मन्त्रियों ने चित्रकार को बुलाया। उसको सारी बात समझाई। उससे कहा कि यदि उसने राजा का मन बदल दिया, तो वे उसको करोड़ मुहरें देंगे।

"आप ऐसी कुछ व्यवस्था कीजिये कि राजा मुझे मिलने के लिए बुलायें। उसके बाद जो कुछ करना होगा, मैं कर दूँगा।" चित्रकार ने मन्त्रियों से कहा।

मन्त्रियों ने राजा के पास जाकर कहा—"हमारे नगर में एक बड़ा चित्रकार आया है....ऐसा मालम होता है कि उसकी बराबरी करनेवाला कोई नहीं है।"

सूर्यकान्त महाराजा तो बहुत-सी कलाओं में पारंगत था। उसने यह सुन सन्तुष्ट होकर कहा—"तो, उसे मेरे पास बुलावो।"

जल्दी ही चित्रकार राजा के पास आया। वह राजा का सौन्दर्य देखकर चकित रह गया। "महाराज, आपका सौन्दर्य देखकर

मेरा जन्म धन्य हो उठा है। मुझे आप अपना चित्र बनाने की अनुमति दीजिए। आपका चित्र मैं हमेशा अपने पास ही रख लूँगा।"

"पहिले मुझे तुम्हारा हुनर देखना होगा। तुम्हारे पास जो चित्र हैं उनको दिखाओ। परन्तु स्त्रियों के चित्र न दिखाना—समझे। अगर यह किया तो तुम्हें मैं माफ़ न करूँगा।" राजा ने कहा।

चित्रकार ने, जो चित्र भिन्न भिन्न देशों में बनाये थे, राजा के सामने रखे। उसने उनके बीच में जान बूझकर स्त्री का भी एक चित्र रखा। राजा जब एक एक चित्र देख रहा था, तो अचानक स्त्री का चित्र भी दिखाई दिया। उस चित्र को देखते ही राजा मूर्छित-सा हो गया।

चित्रकार ने मुस्कुराकर मन्त्रियों से कहा—"राजा की, जैसा आपने कहा था, वैसी चिकित्सा कर दी है। मेरा ईनाम मुझे दिलवाइये।"

"पहले यह तो मालूम करने दो कि चिकित्सा पूरी हुई है कि नहीं।" मन्त्रियों ने कहा।

"होश आते ही राजा जो कुछ कहेंगे उसे सुनकर आपका सन्देह जाता रहेगा।" चित्रकार ने कहा।

उसके बाहर चले आने के बाद, मन्त्रियों ने राजा की सेवा शुश्रूषा की। होश आते ही राजा ने पूछा—"वह चित्रकार कहाँ है?"

"वह चला गया है महाप्रभु!" मन्त्रियों ने कहा।

"शाम तक यदि तुम उसे बुलाकर न लाये तो तुम हाथियों से कुचलवा दिये जाओगे।" राजा ने कहा। मन्त्री जाकर चित्रकार को बुलाकर लाये, उसको राजा के समक्ष उपस्थित किया।

राजा ने उससे कहा—"तुम-सा प्रतिभाशाली इस संसार में कोई नहीं होगा। तुमने वह चित्र दिखाकर मेरा बड़ा भला किया। शायद यह स्त्री किसी जन्म में मेरी पत्नी रही होगी। नहीं तो वह इस आसानी से मेरा मन न जीत लेती। कहो, वह कौन है? किस देश में वह रहती है? मैं उससे कैसे विवाह कर सकता हूँ?"

चित्रकार ने राजा से कहा—"महाराज, आपके लिए उसे भूल जाना ही अच्छा है।

जाना पड़ता। आप मेरी बात मानिये। कोई उसको हरा नहीं सकता।"

"पगले! जब तक मैं उसे देख न लूँगा, तब तक मैं दम न लूँगा। उसको हराकर मैं अपनी पत्नी बनाऊँगा। नहीं तो, आजीवन उसका गुलाम बनकर उसकी सेवा करूँगा।" सूर्यकान्त महाराज ने कहा।

उसने अनंग राग के घर का रास्ता मालूम कर लिया। वह तुरत उसे देखने निकल पड़ा। यह जान, महाराज का विश्वासपात्र विनोद भी उनके साथ निकल पड़ा।
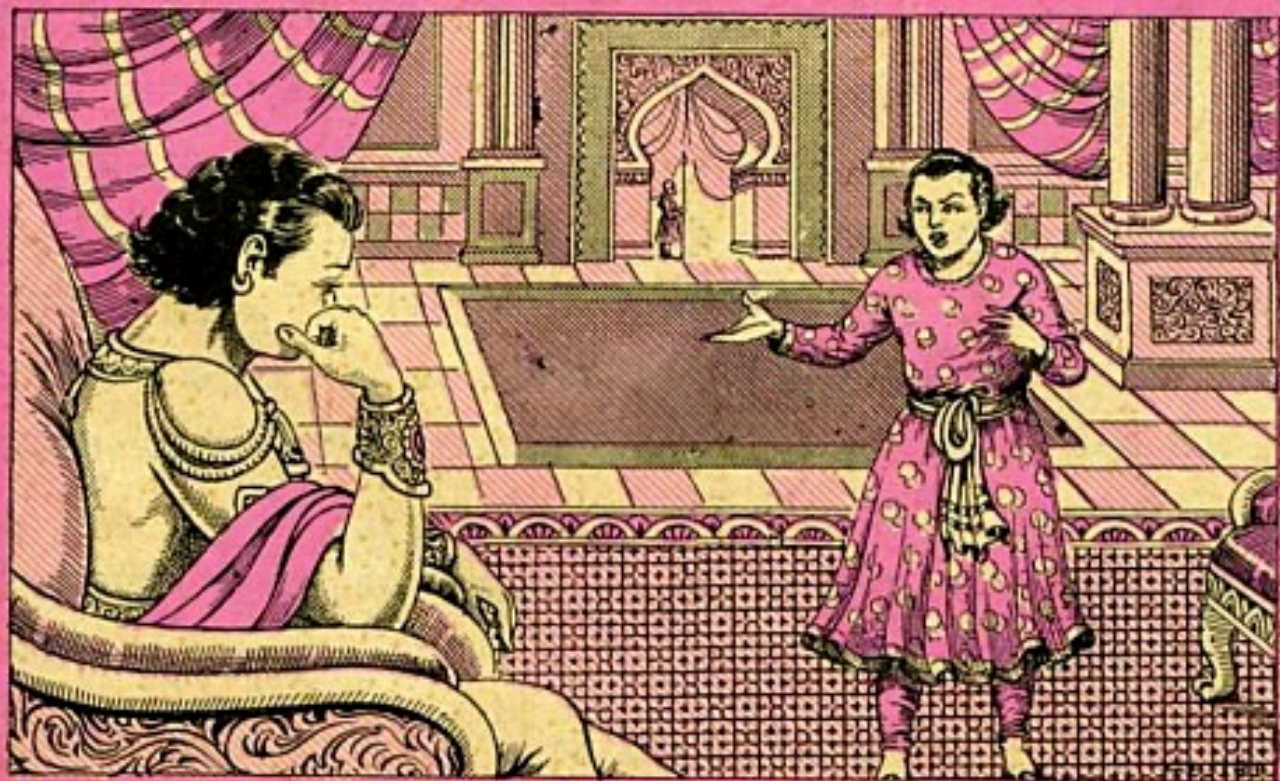
वह आपको न मिलेगी। वह नागराज की लड़की अनंग राग है। वह जंगल में एक महल बनाकर अकेली रहा करती है। कई ने उससे विवाह करने का प्रयत्न किया, कोई भी सफल न हो सका। जो कोई उससे शादी करने आता, वह उसको तीन तीन सप्ताह का समय देती। इस समय में रोज़ उन्हें उससे एक प्रश्न करना होता। यदि वह कभी किसी प्रश्न का उत्तर न दे पाती, तो शर्त थी कि वह उस प्रश्न पूछनेवाले से विवाह करेगी। जो कोई उससे हार जाता, उसे तीन सप्ताह बाद, उसका गुलाम हो

"महाराज, उसका चित्र देखते ही आपकी आधी अक्ल जाती रही। उसको देखते ही आपकी रही सही अक्ल भी जाती रहेगी। उस हालत में आप उसे हरा न सकेंगे। तब मैं आपको अपनी बुद्धि उधार दूँगा।" विनोद ने कहा।

राजा उसकी सलाह मान गया। उसको साथ लेकर वह अनंग राग की जगह गया। उसको प्रत्यक्ष देखते ही सचमुच राजा की अक्ल पूरी पूरी जाती रही।

विनोद ने अनंग राग को बताया कि वे किस काम पर आये थे। उसने उनका

आतिथ्य - सत्कार करके, अपना नियम बताया। "रोज सवेरे जो प्रश्न पूछेंगे, उसका जवाब दूँगी। तीन सप्ताह तक आप मेरे अतिथि रहेंगे। इस बीच में यदि आप जीत गये तो ठीक है, वरना आपको मेरा गुलाम बनना होगा।" यह बताकर वह शान से चली गई।

उसके बाद हर रोज सवेरे अनंग राज उनके पास आती। विनोद उसको एक कहानी सुनाता और उस कहानी के बारे में एक प्रश्न भी पूछता। प्रश्न का उत्तर अनंग राज देती और चली जाती।

इस तरह उन्नीस दिन बीत गये, विनोद उसको न हरा सका। सूर्यकान्त तो उसका सौन्दर्य देखने में इतना मग्न था कि न वह विनोद की सुनाई हुई कहानी सुनता, न उसके प्रश्न, न अनंग राग के उत्तर ही।

उसको अनंग राग में एक परिवर्तन दिखाई दिया। पहिले दिन उसने उसकी ओर देखा तक नहीं। दूसरे दिन उसने जाते समय राजा की ओर एक बार देखा। उसके बाद राजा पर कभी कभी नजर डालती। कभी कभी लम्बे लम्बे साँस छोड़ती। इधर उधर की हरकतें करती।
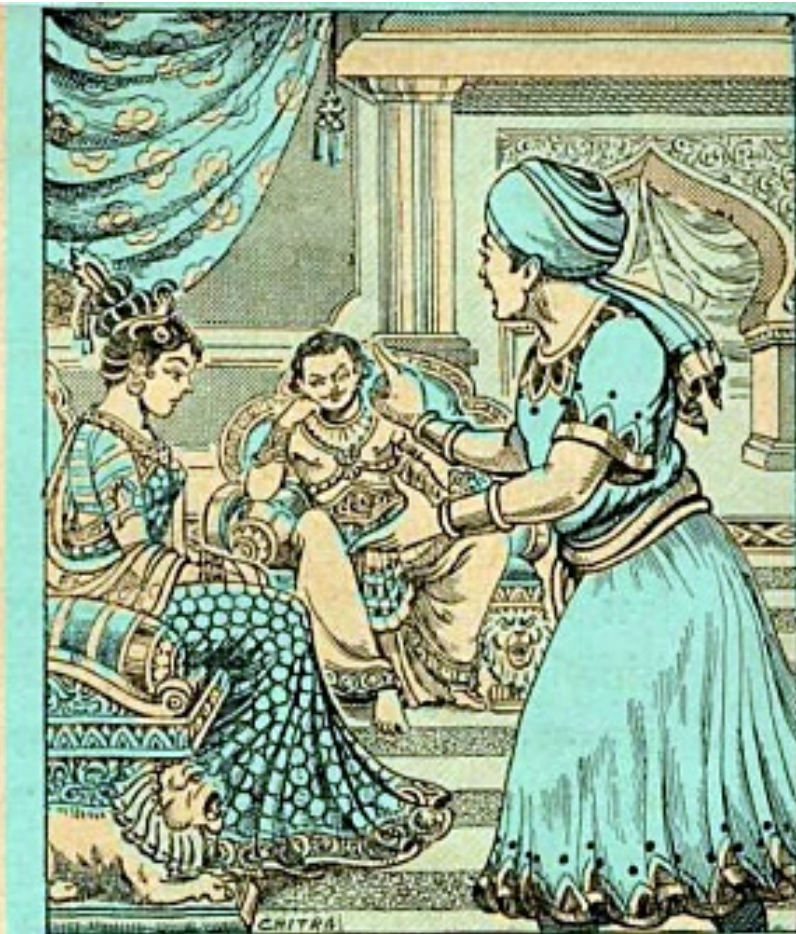
"मैंने जैसे तैसे उसका हृदय तो जीत लिया है। पर विनोद अभी तक उसकी अक्ल नहीं जीत पाया है।" राजा ने मन ही मन सोचा। ठीक उसी समय उसके मन में एक प्रश्न उठा। उसने तुरत उठकर अपने मित्र से कहा—"मित्र! उन्नीस दिनों से तुम अनंग राग को नहीं हरा पाये हो। कल मैं ही उससे एक प्रश्न पूछूँगा। यदि उसने उस प्रश्न का उत्तर न दिया, तो कल वह हार ही जायेगी। यदि उत्तर

दे भी दिया तो परसों ज़रूर हार जायेगी, परसों तक तो हमारे पास अभी समय है।"

अगले दिन अनंग राग के आते ही महाराज ने उससे एक प्रश्न किया। उस प्रश्न के सुनते ही अनंग राग ने उसको आलिंगित करके पूछा—"यह प्रश्न इतने दिन क्यों नहीं पूछा था? मैं तो घबरा गई थी कि कहीं आप शायद जीतें न।"

राजा ने हैरान होकर पूछा—"यदि तुम सचमुच हारना चाहती थी, तो हमारे प्रश्नों का उत्तर जो न दिया होता।"

"महाराज! आप स्त्री का हृदय नहीं जानते। वह जिस आदमी से प्रेम करती है, उसको ही पीड़ा देती है।" अनंग राग ने कहा।

राजा ने उससे फिर विवाह किया। अपने नगर उसको ले गया, गृहस्थी भी करने लगा। मन्त्री बड़े खुश हुए कि उनका राजा भी घरवाला हो गया था।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा! उस महाराजा ने कौन-सा प्रश्न पूछकर उसे हराया था? यदि जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"यह तो कोई कठिन प्रश्न नहीं है। "मैं ऐसा कौन-सा प्रश्न पूछूँगा, जिसका तुम उत्तर न दे पाओगी?" राजा ने अनंग राग से यह पूछा होगा। उत्तर देती है, तो हार जाती है, उत्तर में जो प्रश्न बताती राजा उससे अगले दिन वही प्रश्न करता, तब निश्चित ही हार जाती।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठ गया। (कल्पित)

साधु जो मरकर जी उठा

अगले दिन नानी ने गोल मटोल भीम से कहा—"बेटा, कल जिसने तुम्हें काम दिया था, वह बड़ा ख़राब था। उन जैसों के पास न जाना। किसी बूढ़े साधु की सेवा करोगे तो कम से कम मुक्ति मिलेगी।"

भीम घर से यह देखने के लिए निकला कि कोई बूढ़ा साधु मिलता है कि नहीं। एक जगह उसको एक अन्धा भिखारी और उसको ले जानेवाला लड़का दिखाई दिया। लड़के ने भीम से बातचीत की। उसने मालूम कर लिया कि वह घर से क्यों निकला था। उसने कहा—"यह अन्धा बड़ा साधु है। मैंने इतने दिनों से इसकी सेवा करके बहुत सी बातें इससे जानी हैं। चाहो तो तुम मेरे बदले इसकी सेवा करो।"

गोल मटोल भीम इसके लिए मान गया। भिखारी के शिष्य ने भीम को भिखारी को सौंपकर कहा—"आज से तुम इसको शिष्य रख लो। मैं जा रहा हूँ।" कहकर वह अपने रास्ते चला गया।

भिखारी ने भीम को बताया कि उसको क्या क्या करना था। "हम घर घर जाकर भीख माँगते हैं। क्योंकि मुझे दिखाई नहीं देता है, इसलिए तुम मेरी लाठी पकड़कर मुझे रास्ता दिखाओ। पीछे मुड़कर देखने की ज़रूरत नहीं है। जब कभी ऊँची जगह आये, या कहीं गढ़ा दिखाई दे, या कहीं पानी हो, तो ज़रा मुझे बता देना। घरों में भीख माँगने के बाद हम खाना बनाकर खायेंगे। तुम्हें ही खाना पकाना होगा। फिर चलने से पहिले तुम्हें यह मालूम करना होगा कि सब समान ठीक है कि नहीं। जानते हो हमारा समान क्या है? थाली, टोकरी,

जब दोनों चल रहे होते, तो भीम बीच बीच में रुककर भिखारी को देखता। भिखारीने उससे कहा—"तुम न ठहरो, चलते जाओ। यदि ज़मीन कहीं ऊँची हो, या कहीं गढ़ा हो, या पानी हो तो कह देना।"

भीम आगे आगे चलता जाता था। कुछ दूर जाने के बाद एक नाला आया।

भीम ने बिना पीछे मुड़े कहा—"गुरु, पानी।"

"क्या, कोई पार कर रहा है?" भिखारी ने पूछा।

नाला पार करते गौओं को देखकर उसने कहा—"गुरु, गौवें पार कर रही हैं।"

"तो चलो, हम भी पार करें।" भिखारी ने कहा।

भीम ने नाले में कुछ दूर जाने के बाद कहा—"पत्थर, गुरु।" कहकर वह पानी में गिर गया। उसके गिरने से भिखारी भी गिर गया। उसका झोला लाठी के मुड़े सिरे में फँस गया। झोले में कुछ मछलियाँ और एक साँप फँस गया। भिखारी प्रवाह में बह गया।

लोटा, करछी, छड़ी, बस....तुम ये सब कंठस्थ कर लो। जो कुछ मैंने कहा, यदि तुमने किया तो जो कुछ मिलेगा, उसमें से आधा ले लेना। समझे।"

जो कुछ भिखारी ने कहा था, उसे भीम ने ध्यान से सुना। सन्यासी के पास एक लाठी थी। लाठी के दोनों सिरे मुड़े हुए थे।

भिखारी झोला कन्धे पर डाल लाठी का एक सिरा पकड़कर चलता, टोकरा सिर पर रख भीम लाठी का एक और सिरा पकड़कर आगे आगे जाता।

भीम ने उठकर पानी में से थाल बाहर निकाला। "थाल, टोकरा, लोटा, करछी, लाठी—बस" उसने सब गिनकर देखे, भिखारी के लिए पीछे मुड़कर न देखा। लाठी के सिरे पर अटके झोले को लेकर खींचता चल गया।

दुर्भाग्यवश उस साँप ने, जो झोले में चला गया था ज्योंही सिर बाहर निकाला, तो लाठी के मोड़ में वह फँस गया और मर गया।

भीम नदी पार करके झोला खींचते खींचते रास्ते में जा रहा था, तो कई जोर से चिल्लाये—"अरे अरे, साँप साँप।"

"साँप नहीं है, स्वामी हैं।" भीम ने उनको उत्तर दिया।

"साँप है कि स्वामी, तुम ही पीछे मुड़कर क्यों नहीं देख लेते हो?" उन्होंने कहा।

"नहीं देखूँगा, नहीं देखना चाहिए। स्वामी की आज्ञा है।" भीम ने कहा। उसके चारों ओर एक झुन्ड जमा हो गया। उसने रुककर कहा—"गुरु!"

उसके "गुरु" कहने पर भिखारी "जय सीताराम" कहा करता, घरवाले

भीख देना चाहते तो देते, नहीं तो आगे जाने के लिए कहते।

इस बार पहिले की व्यवस्था के अनुसार भीम ने "गुरु" कहा। परन्तु भिखारी ने नहीं कहा—"जय सीताराम" तब उसने लाठी के दूसरे सिरे पर देखा, उसको मरा साँप दिखाई दिया।

सब ने अट्टहास करके कहा—"अरे भाई, तुम्हारा स्वामी साँप हो गया है। उनकी समाधि बना दो।" भीम ने सोचा कि शायद वे ठीक कह रहे थे। वह उस मरे साँप को शहर से बाहर ले गया। एक गढ़ा खोदा, उसमें उसे गाड़ दिया। उस पर उसने दो चार तुलसी के पौधे भी लगा दिये।

इस बीच भिखारी क्योंकि अभी उसकी उम्र बाकी थी, जैसे तैसे किनारे पर आया। वहाँ एक जगह बैठकर भीख माँगने लगा।

साँप को गाड़कर जब भीम उस तरफ़ आ रहा था, तो भिखारी को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। "स्वामी की भी क्या महिमा है।" उसने अपने सिर पर रखे थाल को उतार कर कहा—"गुरु, ये लो थाल, टोकरा, लोटा, करछी, लाठी बस।"

भिखारी खौलता चिल्लाया "चोर कहीं के। मुझे नदी में धकेलकर फिर मेरी सेवा करने आये हो? देख मैं तेरी खबर कैसे लेता हूँ।"

भीम भागकर घर गया। उसने नानी से सब कुछ कहा—"नानी, मेरा कोई कसूर न था, फिर भी स्वामी मुझ पर यूँ ही बिगड़ पड़े।"

"तू निरा बावला है। तुम किसी की सेवा न करो। जंगल जाकर लकड़ियाँ काट लाया करो और यहीं पर पड़े रहा करो।"

(अगले अंक में एक और घटना)

विधि अचूक है

एक गाँव में एक किसान के यहाँ सीताराम नाम का एक लड़का था। वह उसकी गौ-भैंसे चराया करता। वह रोज़ सवेरे उठता, मालिक के यहाँ काम करके, बासा भात खाकर, सवेरे ही गौ-भैंसों को चराने निकल जाता।

गाँव के बाहर एक उजड़ा बाग था। कभी उसमें अच्छे अच्छे फलों के वृक्ष थे। अब घास-फूस उग आई थी। उस बाग में गौ-भैंसों के लिए बहुत-सा चारा था और चराने पर कोई पूछनेवाला न था। गड़रियों के चढ़ने उतरने के लिए कुछ पेड़ रह गये थे। कभी कभी उनपर फल भी मिल जाते थे। सीताराम और उसके साथी अपने पशुओं को चराने उस बाग में आ जाते। पशु चरते रहते और लड़के शाम तक खेल-खिलवाड़ करते रहते। जब धूप होती तो पेड़ों की साया में बैठकर गप्प मारते। शाम होते ही गाँव वापिस चले जाते।

एक दिन सीताराम पशुओं को लेकर रोज़ की तरह बाग में गया। उस दिन त्यौहार था, इसलिए कोई लड़का न आया था। सीताराम त्यौहार के बारे में कुछ न जानता था। अकेला था, उस समय उसको बाग भी न भाया। वह सारे बाग में घूमा। उसने अपना गुस्सा पशुओं पर दिखाया। उनको इधर उधर हाँकता रहा। पर समय कटता-सा न लगता था।

सीताराम तो यूँही ऊबा हुआ था, फिर इतने में उसके ऊपर आकर एक भिड मँडराने लगा। क्योंकि वह उसको अपनी ओर आता देख रहा था, इसलिए उसने एक झटके में उसे मार दिया। उसके दो टुकड़े करके उसने दूर फेंक दिया।

हृदयेन्द्र

वह एक हरी झाड़ी पर गिरा, उसमें प्राण-सा आ गया और वह उड़ गया।

सीताराम चकित रह गया। उसने गौर से वह जगह देखी, जहाँ भिंड गिरा था। उस झाड़ी में बहुत-से पत्ते थे। वे मामूली पत्ते न थे। वे बड़े नरम पत्ते थे। उसे लगा कि इन पत्तों के कारण वह मरा भिंड जी गया होगा।

उसने संजीवी बूटियों के बारे में सुन रखा था। उसने सोचा कि शायद वह वही बूटी थी। उसने सावधानी से देखा कि वह कहाँ थी, कैसे थी।

सीताराम को कभी संजीवी बूटी पर पूरी तरह विश्वास न हुआ था। उसपर से जो भिंड उड़ गया था शायद वह उसका फेंका हुआ न था। वह सारे बाग में घूमा, उसे एक जगह एक मरी हुई टिड्डी दिखाई दी। उसने उसे लाकर संजीवी बूटी पर रखा तो वह एक क्षण में हिली, फिर इधर उधर कहीं चली गई।

अब सीताराम जान गया कि वह सचमुच संजीवी बूटी ही थी। जो कोई उसको छुयेगा, वह ज़रूर पुनर्जीवित हो जायेगा। वह इसके बारे में अपने

साथियों को कहने के लिए उतावला होने लगा।

जब अगले दिन वह अपने साथ के लड़कों के साथ गौ-भैंसों को लेकर आ रहा था, तो उसने बताया कि उसने संजीवी बूटी मालूम की थी। उससे मरे भिड को और टिड्ढी को जिलाया भी था, उनको अचरज होना तो अलग उन्होंने उसकी हँसी उड़ाई। सीताराम को उनपर गुस्सा आ गया। उसने वह बूटी किसी को दिखायी ही नहीं।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन सवेरे गाँव का मुखिया मर गया। गाँव में उसका एक दुमंजला मकान था। वह धनी ही नहीं, दानी भी था। उसने मन्दिर बनवाये। कुँए और तालाब खुदवाये। धर्मशालाएँ बनवाईं। जो कोई घर बनाता या शादी करता उसको भी बहुत-सा धन देता आया था। इसलिए उसको गाँववाले भगवान-सा समझते।

मरने से पहिले वह एक महीने बिस्तर पर पड़ा रहा। महीने भर तरह तरह की चिकित्सा की गई। कई औषधियाँ दी गईं। कितने ही वैद्यों ने आकर देखा। पर कोई भी अपने प्रयत्न में सफल न हुआ।

सवेरे के समय मुखिया के घर के सामने लोगों का जमघट लगा। कई उसकी प्रशंसा कर रहे थे। कई कह रहे थे—"वैद्य औषधी तो दे सकते हैं, प्राण थोड़े ही दे सकते हैं।" गाँव का पुरोहित कह रहा था।

यह बात सीताराम के कान में पड़ी। वह उस समय पशुओं को चराने बाग की ओर जा रहा था। उसने सब कुछ मालूम करके कहा—"मैं जिलाने का प्रयत्न बताता हूँ। उजड़े हुए बाग में संजीवी बूटी है।" उसने उससे पहिले जो स्वयं अपनी आँखों देखा था, उसे बताया।

कई को उसकी बात पर विश्वास न हुआ। फिर भी दो तीन आदमी उसके साथ बाग में गये।

सीताराम पहिले बाग में पहुँचा, उसके बाद गाँववाले गये। वह जानता था कि वह झाड़ी कहाँ थी। रोज वह उसे देखता आया था। इसलिए वह सीधा वहाँ चला गया। परन्तु उसे रोज जो पत्ते दिखाई देते थे, उस दिन वहाँ न दिखाई दिये। वह यह सोचता कि शायद यह झाड़ी हो और शायद यह हो, एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी के पास चलता गया।

गाँववालों को उस पर गुस्सा आ गया। उन्होंने सोचा कि उसने उन्हें ठगा था। उन्होंने उसे मारा। इधर उसे उन लोगों की मार का दर्द था, उधर यह दर्द भी सता रहा था कि कैसे वह झाड़ी गायब हो गयी थी। वह पन्द्रह बार सारा बाग घूम गया। पर वह झाड़ी कहीं न दिखाई दी।

कुछ भी हो, उसके जीवन में जीना नहीं लिखा था। इसलिए जो संजीवी बूटी उसके सामने थी, वह भी न दिखाई दी।

साईमन

पोलेन्ड देश के एक ग्राम में एक होटल था। उस होटल के मालिक के एक लड़का था। उसका नाम था साईमन। वह सुन्दर था, अक़्लमन्द भी। साहसी भी, परन्तु वह निरा आलसी था। बिल्कुल गैर जिम्मेवार। वह कोई भी काम न करना चाहता, परन्तु मन में हवाई किले बनाता, सारा संसार जीतने के मनसूबे बाँधता, किसी राजकुमारी से शादी करने के ख्वाब देखता। दिल में इतनी सारी इच्छायें थीं, पर वह हमेशा आवारागिर्दी करता, शराब पीता, जुआ खेलता। उसके निजी खर्च के लिए उसका पिता कुछ देता। जब वह खतम हो जाता, तो वह पिता के बक्से से पैसा चुराकर ले जाता।

साईमन को सही रास्ते पर लाने के लिए उसके पिता ने कई तरह समझा बुझाकर देखा, परन्तु उसने उसकी सुनी नहीं। इसलिए एक दिन उसने उसको एक सैनिक की पोषाक पहिनवाई, हाथ में एक भाला दिया—"जाओ, अब तुम राजा के यहाँ नौकरी करके जीओ।" कहकर उसे उसने घर से निकाल दिया।

साईमन राजा के यहाँ उन सैनिकों में शामिल हो गया, जो गश्ती लगाते हैं। परन्तु उसकी आदतें, तौर तरीके, बिल्कुल नहीं बदले। अब भी वह बुरे आदमियों की सोहबत में रहता, शराब पीता, जुआ खेलता, झगड़े फसाद करता। वह एक बूढ़े सैनिक के घर रहा करता। साईमन रोज उससे कहा करता। "यहाँ से तो हमारा गाँव अच्छा है। हमारे घर में बहुत-सा धन है, अच्छा खाना है और तरह तरह की शराबें हैं।"

एक दिन उस सैनिक ने साईमन से कहा—"अगर तुम्हारा पिता इतना पैसावाला है, तो लिखो कि तुम्हें बड़ी नौकरी मिल गई है, तुम्हें कोतवाल बनाया गया है। दावत देने के लिए तुम्हें पैसे की जरूरत है, पैसा मंगाओ।"

साईमन को उसकी यह सलाह बड़ी जंची। उसने अपने पिता को लिखा। खत पढ़कर, उसका पिता बड़ा खुश हुआ। उसने सोचा, आखिर उसका लड़का भी एक बड़ा कर्मचारी हो गया था। उस ने साईमन के पास कुछ पैसा भेजा। रुपया पाकर साईमन ने कुछ दिन मजा किया, फिर उसकी पहिले की-सी हालत हो गई। परन्तु अब वह जान गया कि कैसे पिता के पास से रुपया मंगाया जा सकता था। थोड़े दिनों बाद उसने पिता को लिखा कि वह जमादार हो गया था, फिर उसने पिता के पास से पैसा मंगवाया, बाद में उसने यह लिखकर कि वह सूबेदार हो गया था, कुछ और रुपया मंगवाया, फिर उसने लिखा कि वह दलपति हो गया था, इस बहाने कुछ और धन मंगाया और खूब खर्च किया। परन्तु वह तब तक गश्त लगाने का और भाला पकड़कर पहरा देना का ही काम करता आ रहा था।

फिर साईमन को पैसे की तंगी हुई। अब यदि पिता को लिखता, तो उसे कहना होता कि वह सेनापति बना दिया गया था। साईमन ने आखिर यह भी लिखा और बहुत-सा पैसा मंगवाया। उसका खत पाकर, साईमन के माँ बाप बड़े खुश हुए। "जब हमारा लड़का इतना बड़ा हो गया है, तो हमें जाकर देखना ही चाहिये। चलो, चलने के लिए तैयार होओ।" साईमन के पिता ने पत्नी से कहा।

पति-पत्नी गाड़ी में सवार होकर जब राजधानी पहुँचे, तो बड़े मैदान में सैनिकों के उत्सव हो रहे थे। तोप दग रही थीं। सैनिक कवाइद कर रहे थे। बेन्ड बज रहे थे। बड़े बड़े सेना के कर्मचारियों का जलूस निकाला जा रहा था।

साईमन के माँ बाप, गली के किनारे खड़े खड़े औरों के साथ सेनाधिकारियों का जलूस देखने लगे। उनमें साईमन न था। उन्होंने एक से पूछा—"क्या सेनापति साईमन इस जलूस में नहीं है ?"

"साईमन नाम का सेनापति तो कोई नहीं है। हाँ, उस नाम का गश्ती लगाने वाला एक सिपाही अवश्य है।" उनको जवाब मिला। यह सुनते ही साईमन का पिता झुंझला उठा। उसने कोतवाल के पास जाकर कहा कि उसका लड़का उसे सौंप दिया जाये। कोतवाल ने वैसा ही किया। पिता ने साईमन की बोटी बोटी कटवाने की सोची। उस समय उस देश में पिता को पुत्र के प्राण लेने का भी अधिकार था।

"उसे दण्ड आप अवश्य दीजिये, पर मारिये मत।" साईमन की माँ ने अपने पति को मनाने की कोशिश की।
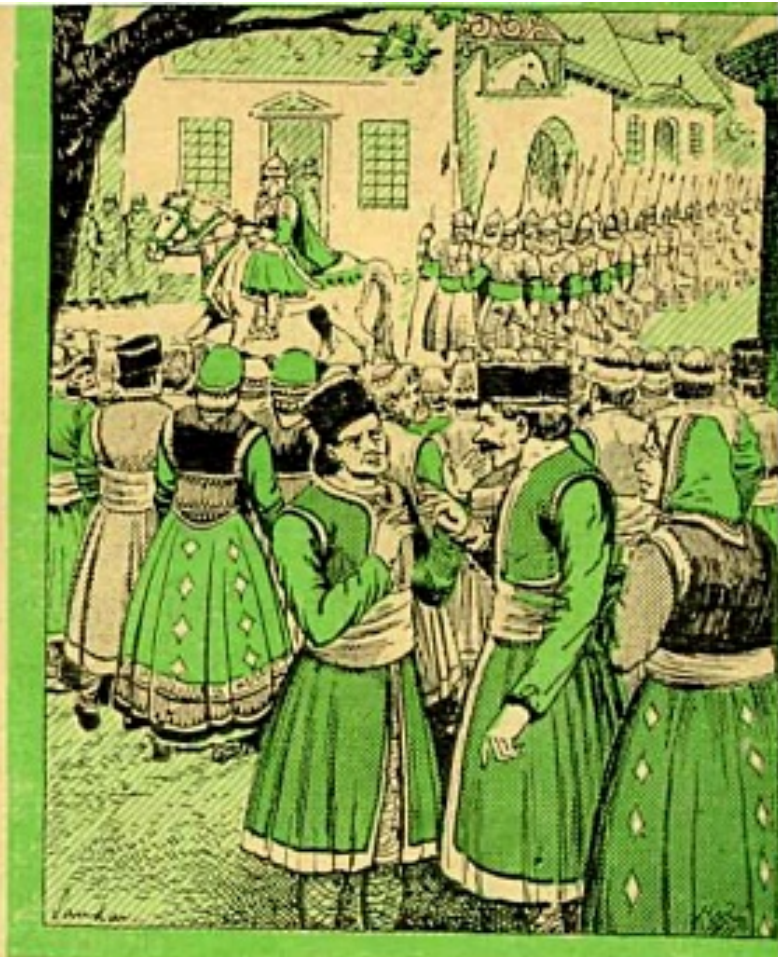
"इसका जीवित रहना ही मेरे लिए खराब है।" कहकर पिता ने साईमन को बान्धकर गाड़ी में पीछे डाल दिया, गाड़ी चलाता, वह घर की ओर निकल पड़ा।

बूढ़ा सैनिक पहिले ही जान गया था कि साईमन पर क्या गुज़र रही थी। उसकी रक्षा करना बूढ़े सैनिक ने अपना कर्तव्य समझा। वह बूढ़ा सड़क पर गया। जब गाड़ी ऊबड़ खाबड़ रास्ते से चली आ रही थी, तो वह पीछे से गया और साईमन के बन्धन उसने काट दिये। उसको

गाड़ी से नीचे उतारा। और साईमन से कहा—"अब तुम्हारे लिए इन प्रान्तों में जीना ठीक नहीं है, जंगलों में से कहीं दूर देश चले जाओ।"

साईमन जंगल के रास्ते निकल पड़ा। उसे ऐसा लगा, जैसे उसको सचमुच स्वतन्त्रता मिल गई हो। अब सारे देश उसके थे। अब वह बड़े बड़े काम कर सकता था। वह कहीं न रुका। बहुत से गाँवों और शहरों में गया, उन दिनों उसने बाँसुरी बजाना सीखा और उसमें काफ़ी प्रवीणता भी पायी।

जाते जाते साईमन को एक जगह एक पहाड़ पर एक राजमहल दिखाई दिया। पहाड़ के नीचे भी एक महल था। पहाड़ के नीचे का महल रोशनी के कारण चमचमा रहा था। पहाड़ के ऊपर का महल उजड़ा-सा मालूम होता था। इन महलों के बारे में साईमन ने वहाँ के लोगों से जानकारी हासिल की।

पहाड़ पर जो महल था, वह मृत राजा का था। उस राजा ने बहुत-सा धन कमाया, पर जब तक जीवित रहा वह क्रूर कहलाया गया। लोगों को उसने सताया।

उसने सब तरह के पाप किये। मरकर वह भूत बन गया और वह उस महल में बसेरा किये हुए था। इसलिए उसके लड़के ने वह राज-महल छोड़ दिया। पहाड़ के नीचे एक और महल बनवाया और उसमें अपनी लड़की के साथ आराम से रहने लगा।

इस राजा की लड़की बड़ी सुन्दर थी। उससे विवाह करने के लिए बहुत से युवक तैयार थे। परन्तु उसकी जन्म पत्री में लिखा था कि वह ही उसका पति हो सकेगा, जो पहाड़ पर के महल को भूत से मुक्त कर सकेगा। इसके लिए भी कई युवक तैयार हो गये और भूत को भगाने के लिए पहाड़ पर के राज-महल में गये। मगर वे वापिस न आये। भूत ने उनके प्राण ले लिए होंगे। इस प्रकार कुछ लोगों के मर जाने के बाद राजकुमारी से विवाह करने के लिए किसी ने साहस न किया। राजकुमारी अपनी हालत पर हमेशा आँसू बहाती रहती। राजा अपनी लड़की का दुःख देखकर बड़ा चिन्तित रहता।

इस कहानी को सुनने के बाद साईमन ने सोचा कि मैं ही भूत को भगाकर राजकुमारी से विवाह करूँगा। कभी गाँव

में उसने ख्वाब देखे थे कि वह ऐसे ही काम करेगा। उन सपनों को सच करने का मौका उसे अभी मिला था। भूत के हाथ वह मारा भी जा सकता था। परन्तु वह इसके कारण अधिक भयभीत न था।

उसने रात वहीं काट दी। अगले दिन सवेरा होते ही साईमन अपनी बाँसुरी लेकर नीचे के महल के बाहर एक पेड़ के पास बैठ गया और बाँसुरी पर मीठी-मीठी तर्जें गाने लगा।

तब राजा और राजकुमारी उठ चुके थे। नित्यकृत्य से निवृत्त होकर प्रातःराश करने जा रहे थे। राजकुमारी को बाँसुरी बहुत अच्छी लगी।

" पिताजी, यह गाना बड़ा अच्छा है। वह जो बजा रहा है, क्या उसे बुलाकर घर में रख लें। जब कभी मेरा मन नहीं लगेगा, तब यह बाँसुरी बजाकर मेरा मन बहलायेगा।" राजकुमारी ने कहा।

राजा अपनी लड़की का दुःख दूर करने के लिए सब कुछ करने को तैयार था, उसने अपनी लड़की से कहा—" इसमें क्या रखा है? उसे बुलायेंगे।"

राजकुमारी ने नौकरों की भी प्रतीक्षा न की। वह स्वयं बाहर आई। वह पेड़ के पास बैठे साईमन के समीप गई। उसे अन्दर आने के लिए निमन्त्रित किया। उसको प्रत्यक्ष देखने के बाद साईमन ने सोचा कि जो कुछ उसने सुना था, उसमें कोई अतिशयोक्ति न थी। वह सौन्दर्य में सचमुच अप्सरा की तरह थी।

प्रातःराश के बाद राजा ने इच्छा प्रकट की कि वह दरबारी गवैय्या बने, उसने यह भी बताया कि पहाड़ पर के राजमहल पर भूत थे। उसको भूतों से छुड़ानेवाला ही राजकुमारी से विवाह कर सकेगा।

"मैंने ये बातें पहिली ही सुन रखी हैं। महल में से भूत भगाकर, राजकुमारी से विवाह करने की इच्छा भी मुझमें है।" साईमन ने बिना किसी झिझक के कह दिया।

राजकुमारी ने कुछ कहा तो नहीं, पर उसके मन में बहुत-सी बातें उठने लगीं। उस भूत का, जो कई को निगल चुका था, सामना करने के लिए साईमन को सिद्ध देख, उसने उसकी प्रशंसा की। यदि सचमुच उसने भूत को भगा कर, उससे शादी की तो उसको और कुछ नहीं चाहिए था, क्योंकि वह नौजवान था और खूबसूरत भी। एक ओर उसके मन में यह भी भय था कि कहीं वह भूतों का शिकार न हो जाये।

राजा ने साईमन का निश्चय बदलने के लिए कोशिश की। साईमन ने अपना निश्चय कुछ भी हो, न बदलने की ठानी। इसलिए राजा ने साईमन के लिए एक गाड़ी तैयार करवाई। सूर्यास्त के समय उसको गाड़ी पर, पहाड़ पर के महल के पास भेज दिया।

साईमन जोश में गाड़ी पर से उतरा और जल्दी-जल्दी उजड़े महल में चला गया। द्वार पार करते ही बड़ा-सा कमरा था। वहाँ दीवारों पर बड़े-बड़े चित्र थे। सोने से मढ़े बड़े-बड़े शीशे थे। कीमती रेशमी परदे टंगे हुए थे। परन्तु सब वस्तुओं पर मिट्टी पड़ी हुई थी। कई चीज़ें तो टूट फूट भी गई थीं।

साईमन वहीं बैठ गया और कोई किताब पढ़ता भूत की इन्तज़ार करता रहा। एक एक घंटा बीतता जाता था। ठीक आधी रात के समय किसी के आने की ध्वनि सुनाई दी। ज्यों-ज्यों वह ध्वनि पास आती जाती थी, त्यों-त्यों उसकी

दिल की धड़कन बढ़ती जाती थी। परन्तु वह हिलाडुला नहीं, वह वैसे ही कुर्सी पर बैठा रहा।

थोड़ी देर बाद बाहर के दरवाज़े खुले और किसी बूढ़े की आकृति अन्दर आती हुई-सी दिखाई दी। वह बिल्कुल काला था। उसके हाथों में चाबियों का एक गुच्छा था। उसके आँखें ज़ोर से चमक रही थीं।

साईमन ने अपनी नज़र पुस्तक पर गाड़े रखी। कुर्सी पर बैठा रहा। बूढ़े ने उसके पास आकर पूछा—"इस महल में बैठने की अनुमति तुम्हें किसने दी है?"

"किसी ने भी अनुमति न दी। यह सोच कि यहाँ कोई नहीं है, मैं रात बिताने आया हूँ।" साईमन ने कहा।

"तुम्हारी इतनी हिम्मत? क्या तुमने नहीं सुना कि मेरा हाथ कितने मूर्ख मारे गये हैं?" भूत ने पूछा।

"मैं यूँ ही डरनेवाला नहीं हूँ। मैं किसान हूँ। किसानों के वंश में मेरा जन्म हुआ है। मुझे नहीं मालूम कि आप जीवित अवस्था में कितने भयंकर थे। मगर इस समय आप उतने भयंकर नहीं मालूम होते।" साईमन ने मामूली ढ़ंग से कहा।

"अरे नीच कहीं के बहुत बढ़ चढ़कर बातें कर रहे हो। क्या अन्त तक इसी तरह बात कर सकोगे? देखें? इन चाबियों को लेकर, ज़रा उस तरफ़ का कमरा तो खोलो।" भूत ने कहा।

"यह दिखाने के लिए कि मुझे डर नहीं है, तुम्हारे साथ आ तो जाऊँगा, पर दरवाज़े खोलने के लिए मैं कोई तुम्हारा नौकर नहीं हूँ। तुम ही अपने घर और उसके दरवाज़ों को खोलो।" साईमन ने कहा।

भूत ने कुछ न कहा। दरवाज़े खोलकर पहली तरफ़ के कमरे में उसने पैर रखा। जब वह कमरे में पैर रख रहा था, तो उसके काले बाल उड़ से गये और सफ़ेद बाल आ गये, कम से कम साईमन को ऐसा लगा।

उस कमरे को पार कर भूत ने एक और कमरा खोला। साईमन भूत के साथ आगे-आगे गया। ज्यों-ज्यों वे एक-एक कमरा पार करते जाते थे, त्यों-त्यों वह भूत ऊपर से सफ़ेद होता जा रहा था। यह देख साईमन बड़ा खुश हुआ। बीच बीच में उस भूत ने चाबियों का गुच्छा साईमन को दिखाकर कहा—"दरवाज़े

खोलो।" परन्तु साईमन ने सोचा कि उसकी आज्ञा का पालन न करने में ही श्रेय था। इसलिए वह कहता गया—"यह तुम्हारा घर है, तुम ही दरवाज़े खोलो।"

सात कमरों के पार करने के बाद, भूत के कमर के ऊपर का भाग सफेद हो गया। जब वे बारहवें दरवाज़े के पास पहुँचे तो सिर से ऐड़ी तक रंग साफ़ हो गया और वह सफेद हो गया। बारहवें दरवाज़े के खुलने के बाद सड़ते शवों की दुर्गन्ध आई। उस दुर्गन्ध के कारण साईमन का सिर चकरा गया। उस कमरे में शवों का ढ़ेर पड़ा था।

भूत ने साईमन की ओर मुड़कर कहा—"ये सब मेरे हाथ मारे गये हैं। मुझे मुक्त करने का उपाय इनमें से एक भी न जानता था। यह शायद एक किसान के हाथ ही सम्भव है, यही शायद लिखा हुआ है। तू ही अकेला है, जो जानता है कि क्या कहना है। क्या करना है। तुमने अपने प्राण तो बचा ही लिये, इस महल में भी तुमने प्राण डाल दिये हैं और मुझे इतने समय बाद इस संसार से विमोचन मिला। किसी और लोक में मुझे क्या और भुगतना पड़ेगा, मैं नहीं जानता। यह रहा गँड़ासा, जिससे मैंने इन सबका सिर काटा था, उसी से मेरा सिर काट दो। मैं चला जाऊँगा।"

साईमन पहिले तो हिचका, फिर उसने जैसा कि भूत ने चाहा था, वैसा ही किया। उसके गले पर उसने गँड़ासे से एक चोट की। तुरत भूत का शरीर पिघल-सा गया। उसमें से एक चिड़िया निकली और वह फरफराती, खिड़की में से, आकाश में उड़ गई। (अगले अंक में समाप्त)

गरीब का भाग्य

एक गाँव में एक किसान रहा करता था। वह और उसकी पत्नी दोनों ही अच्छे स्वभाव के थे। उनके बहुत-से बच्चे थे। यद्यपि दोनों जी तोड़कर मेहनत करते थे, पर इतना भी न कमा पाते थे कि पेट भरने के लिए माँड़ मिलता। जिस दिन उनका पेट भर जाता, मांड पीकर ही उनको लगता, जैसे कोई दावत खाली हो।

यद्यपि खाने पीने की इतनी तंगी थी, तो भी यदि कोई भूखा उनके घर आता तो वे कभी न न कहते। उस अतिथि को भी अपनी माँड़ में से कुछ प्रेम से देते।

एक दिन वे खाना खाने बैठे थे कि एक भिखारी भूख से तड़पता उनके घर आया। किसान और उसकी पत्नी ने अपनी माँड़ में से आधी लेकर उसे दे दी। वह भिखारी जिसके प्राण भूख के कारण जाने को थे, उस माँड़ को पीकर इस प्रकार जी उठा, जैसे कोई अमृत पी लिया हो। उसका मुख खिल-सा उठा। उसने किसान से कहा—"मैंने तुम-सा पुण्यात्मा कहीं नहीं देखा। तुम वह हंडी लाओ, जिसमें तुम माँड़ बनाते हो, मैं उसको अक्षयपात्र बना दूँगा।"

किसान की पत्नी ने हंड़ी लाकर भिखारी को दी। उसने उसको हाथ में लेकर कोई मन्त्र पढ़ा। फिर उस पर ढ़कना रखकर उसने कहा—"अब तुम खाने के मोहताज न रहोगे। राजा के घर जो पकवान बनते हैं वे सब पकवान तुम्हें इस हंड़ी में मिलेंगे।" वह यह कहकर, तुरत उठकर चला गया।

किसान दम्पति ने उस भिखारी की बातों पर विश्वास न किया। उन्होंने उसकी बातों को आशीर्वाद समझा। परन्तु

उस दिन रात को जब हंड़ी चूल्हे पर चढ़ानी चाही, तो उसमें से अच्छी सुगन्ध आने लगी, हंड़ी में पकवान ही पकवान भरे थे। सब ने पेट भरकर खाया, पर तब भी वे खतम न हुए। वह सचमुच राजाओं के योग्य भोजन था।

उसके बाद, वह परिवार स्वयं तो राज-भोजन करता ही, वे जो खाते, अतिथियों को भी देते। वह उनसे कहता—"जो कुछ हम दें, वह खाइये तो, पर उसके बारे में हम से कोई प्रश्न न कीजिये।" उसके यहाँ जो खाकर जाते, वे और जगह जाकर कहा करते—"फ़लाने किसान के घर जो खाना खाया था वही खाना है। सिवाय महाराजाओं के वह भोजन किसी को नहीं मिलता।"

इधर किसान के घर यों हो रहा था और उधर महाराजा के घर यह देखा गया कि वहाँ पकवान कम हो रहे थे। यह बात सब से पहिले राजा के रसोइये को मालूम हुई। वह प्रायः जरूरत से अधिक ही बनाया करता। पर अब वह देखने लगा कि वे काफ़ी न थे। वह बड़े पात्र में खीर भरकर रखता, जब परोसने जाता
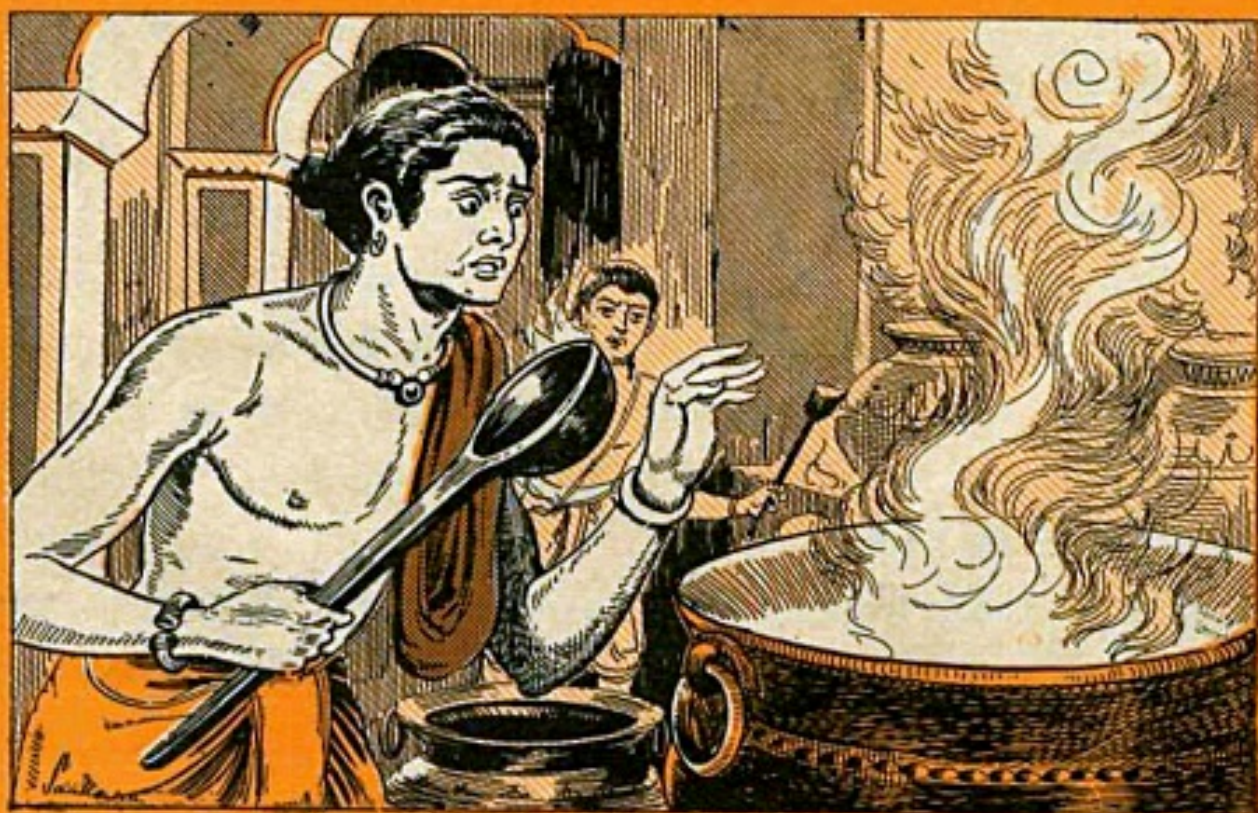
तो देखता कि पात्र भरा हुआ न होता। जब रोज ऐसा होने लगा, तो उसने सोचा कि कोई चोर चोरी कर रहा था। परन्तु वह न जान सका कि वह चोर कौन था।

आखिर उसने इस आश्चर्य के बारे में राजा से कहा। राजा ने पहिले उसकी बातों पर विश्वास न किया। फिर उसने स्वयं गौर से देखा कि पात्रों में से खाने की चीज़ें कम हो रही थीं।

राजा ने यह बात मन्त्री से कही। मन्त्री ने भी स्वयं देखा, उसको भी लगा कि वस्तुतः चीज़ें कम हो रही थीं। राजा के घर का भेद बहुत दिन भेद नहीं रहता। सारे शहर में यह बात फैल गई कि राजा के घर से खाने की चीज़ें गायब हो रही थीं, और यह भी अफवाह उड़ी कि किसान के घर राजोचित भोजन किया जा रहा था। इन दोनों अफवाहों के मिलाने पर, सोचनेवाले सोचने लगे थे कि जो चीज़ें राजा के यहाँ कम हो रही थीं, वे किसान के घर पहुँच रही थीं। जल्दी ही यह सन्देह राजा और मन्त्री तक भी पहुँचा।

"असम्भव! मैंने स्वयं मालूम किया है। यह किसान शहर से दूर एक झोंपड़े में रहता

है। बहुत गरीब है, बहुत भला है, यदि कोई कहे कि रोज वह महल में आकर चीज़ें चुराकर ले जा रहा है, तो वह विश्वसनीय विषय नहीं है। जो इस तरह राजमहल में आ सकता है वह और कितनी ही कीमती चीज़ें उठाकर ले जा सकता है। और आराम से रह सकता है। रोज इस तरह चोरी करने के लिए आने की क्या ज़रूरत है।" मन्त्री ने कहा।

"फिर भी हम जाकर चलो उसके घर एक दिन खाना खायें। सुना है वह कभी अतिथि को न नहीं कहता है।" राजा ने कहा।

राजा और मन्त्री मामूली कपड़े पहिनकर, बड़ा-सा पगड़ बाँध, लाठी लेकर किसान के घर की ओर पैदल निकले। जाने से पहिले उन्होंने मालूम कर लिया कि राजमहल में उस दिन क्या क्या बना था।

उधर किसान के घर सब भोजन करने के लिए बैठे थे कि दो हट्टे कट्टे आदमियों ने आकर कहा—"हम परदेसी हैं। धूप में आये हैं। थोड़ा-सा भोजन क्या दे सकोगे?"

किसान उनको प्रेम से अन्दर ले गया। उनके सामने भी पत्तल रखे। पत्नी से परोसने के लिए कहा और स्वयं कहने लगा "जो कुछ हम खिलायें वह खाइये। उसके बारे में कोई प्रश्न न कीजिये।"

ज्यों ज्यों चीज़ें परोसी जाती गईं त्यों त्यों राजा और मन्त्री जान गये कि वे पकवान राजमहल से ही आये थे। वे भोजन करने के लिए तो आये ही न थे। इसलिए उन्होंने किसान से पूछा—"यह भोजन, जो रईसों को भी नहीं मिलता है, तुम्हें कैसे मिला?"

"कृपा करके मुझ से कुछ न पूछिये।" किसान ने कहा।

"जब तक बताओगे नहीं, तब तक हम कौर नहीं निगलेंगे।" अतिथियों ने जोर से कहा।

और क्या करता, किसान ने जो कुछ हुआ था, वह बता दिया, राजा को सब सुनने के बाद बड़ा गुस्सा आया। वह तपाक से उठा। किसान की हंडी तोड़कर, मन्त्री को साथ लेकर चुप-चाप चला गया।

परन्तु किसान की पत्नी हंडी की टुकड़ों को इकट्ठा करती, बात बात पर रोने लगी।

"अरे, रहने भी दो, क्या हमने हमेशा ऐसा भोजन ही किया था? आज से हमारा भोजन का सुख समाप्त समझो। हमारी माँड़ तो हमारे पास है ही।" पति ने उसे समझाया।

किसान के घर हाँडी फोड़कर, जब राजा मन्त्री घर गये, तो उनको भोजन न मिला।

"महाराज! पकवान जब चूल्हे पर बर्तनों में पक रहे थे, तभी गायब हो गये। चाहें तो आप स्वयं बर्तन देखिये, बाहर धुयें से काले काले हो रहे हैं, और अन्दर

मँजे से लगते हैं। एक एक बर्तन में, मैंने छः छः बार शाक बनाने की कोशिश की, पर वे सब खाली होते जा रहे हैं।" रसोइये ने कहा।

राजा, अच्छा होता, किसान के घर ही खाना खा आता। मन्त्री ने अपने घर से राज-परिवार के लिए भोजन भिजवाया। पर जब वे राजा के घर पहुँचे, तो वे भी गायब हो गये।

राजा को मालूम हो गया कि उसने अन्याय किया था। वह मन्त्री के साथ किसान के घर गया। उसके पैरों पर पड़कर कहा—"मैं गुस्से में जो कुछ कर बैठा था, उसे माफ़ करो। तुम्हारी हंड़ी तोड़ दी है, उसके बदले तुम्हें बड़ी-सी जागीर दूँगा। यही नहीं, हमारा भंड़ार, तुम्हारा भंड़ार है। रोज जो कुछ हमारे यहाँ बनेगा उसका आधा तुम्हारे घर भी पहुँचेगा। हमें और हमारे परिवार को भूख से मारने से तुम्हें क्या मिलेगा?" राजा ने कहा।

किसान ने घबराकर कहा—"मैंने तो आपका कुछ नहीं बिगाड़ा है। जब हँड़ी के टूटने पर मेरी पत्नी रोने लगी, तो मैंने कहा कि माँड़ पीकर जी रहेंगे। यदि आपको हानि हुई है, तो हमारे कारण नहीं हुई है। यदि आपको क्षमा करना है, तो वह ही कर सकता है, जिसने मुझे हंड़ी दी है।"

जब राजा ने कहा कि वह अपने घर में बनी चीज़ों में से आधी उनको देगा, तो पकवान न मालूम कहाँ से आ गये। राजा ने जागीर दी थी, इसलिए किसान आराम से भी रह रहा था। तो भी राजमहल से रोज उनके लिए खाना आता। इस तरह उस कुटुम्ब की देखभाल तीन पीढ़ियों तक होती रही।

ताटका का संहार करके मारीच और सुबाहु को मारकर विश्वामित्र ने अपना यज्ञ निर्विघ्न समाप्त किया। उस दिन रात को राम और लक्ष्मण आराम से सोये। फिर सवेरे ही वे उठे। नित्यकृत्य से निवृत्त होकर वे उस जगह गये, जहाँ विश्वामित्र व अन्य मुनि रहा करते थे। उन सबको नमस्कार करके विश्वामित्र से कहा—"महामुनि, हमने आपकी आज्ञा पूरी कर दी है। यदि और कोई कार्य है, तो कृपया आज्ञा दीजिये।"

तब मुनियों ने राम लक्ष्मण से इस प्रकार कहा—"मिथिला नगर के परिपालक महाराजा जनक एक बड़ा यज्ञ करने जा रहे हैं। हम सब वहाँ जा रहे हैं। जनक ने कभी एक यज्ञ करके उसके फलस्वरूप देवताओं से एक अद्भुत धनुष पाया था। देदीप्यमान उस धनुष की राजा जनक धूपबत्तियों और सुगन्ध द्रव्यों से पूजा करते हैं। उस को न देवता ही उठा पाते हैं, न राक्षस ही। फिर मनुष्यों का तो कहना ही क्या! शक्तिशाली राज, राजकुमारों ने कितने ही उसको उठाने का प्रयत्न किया, पर कोई भी सफल न हो पाया। यदि आप हमारे साथ आये तो जनक महाराजा के यज्ञ को और उस अद्भुत धनुष को देख सकेंगे।"

तुरत यात्रा की तैयारियाँ हुईं। विश्वामित्र ने वनपालकों से कहा—"मैं और मुनियों को साथ लेकर गंगा नदी के पार उत्तर की ओर हिमालय पर्वत की ओर जा रहा हूँ।" फिर उन्होंने सिद्धाश्रम की परिक्रमा की। सब मुनि, राम लक्ष्मण के साथ उत्तर की ओर निकल पड़े। उनके बाद कई सैकड़ों गाड़ियों में समिधायें व सामग्री वगैरह आई। वे दिन भर चलते रहे। सूर्यास्त के समय वे शोना नदी के तट पर पहुँचे।

वहाँ सब ने स्नान किया। सन्ध्या की। राम लक्ष्मण विश्वामित्र के पास बैठे थे। उन्होंने विश्वामित्र से पूछा—"स्वामी, वनावृत यह देश कहाँ है, इसका क्या वृत्तान्त है?"

इस प्रश्न के उत्तर में विश्वामित्र ने इस देश के बारे में और अपने वंश के बारे में यों कहा:—

"किसी ज़माने में ब्रह्मा का पुत्र कुश नाम का एक तपस्वी रहा करता था। उसने वैदर्भी नामक एक राजकुमारी से विवाह किया। उनके चार पुत्र हुए—कुशाम्ब, कुशनाभ, अधूर्तरजस और वसु।

उन्होंने क्षत्रिय धर्म के निर्वहण के निमित्त अपने चारों लड़कों में अपनी भूमि बितरित कर दी और उनको आज्ञा दी कि वे न्यायपूर्वक शासन करें। उन्होंने चार नगरों को अपनी राजधानी बनाकर राज्य किया। कुशाम्ब की राजधानी कौशाम्बी थी। कुशनाभ की राजधानी का नाम महोदय था। अधूर्तरजस की राजधानी का नाम था धर्मारण्य। और वसु की राजधानी का नाम था गिरिव्रज। हम अब उनसे शासित देश में हैं।

"इस देश के चारों ओर पाँच पहाड़ हैं। यह शोना नदी उन पर्वतों में से ही

निकलती है। इसी के कारण यहाँ की भूमि उर्वरा और शस्यश्यामला है। यह नदी पूर्व से निकली है और पश्चिम की ओर जाती है।

"कुश के लड़कों में एक कुशनाभ भी था, मैं पहिले ही बता चुका हूँ। उसकी पत्नी का नाम घृताची था। उनके सौ लड़कियाँ पैदा हुईं। वे बहुत सुन्दर थीं। वे सौ लड़कियाँ जब मजे में गा नाच रही थीं तो वायुदेव उस तरफ़ आया। वह उन पर मुग्ध हो गया। उसने उनसे विवाह करने के लिए कहा। यदि उन्होंने विवाह किया तो उसने कहा कि उनको ऐसा देवता बना देगा जो वार्धक्य और मृत्यु से मुक्त हो जायेंगे। परन्तु कन्याओं ने उसको डाँटा डपटा, उन्होंने कहा कि वे उस व्यक्ति से ही विवाह करेंगे, जिन्हें उनके पिता चुनेंगे। वायुदेव को गुस्सा आया। उसने उन सबको बौना बना दिया। तब वे कन्यायें रोती-रोती अपने पिता के पास गईं।

"अपनी लड़कियों की एकता, संगठन और वंशाभिमान को देखकर कुशनाभ बड़ा सन्तुष्ट हुआ। परन्तु उसने सोचा कि

उनको अविवाहित रखना भी ठीक न था। उसने उन सब का कापिल्यपुर के राजा ब्रह्मदत्त से विवाह कर दिया। ब्रह्मदत्त के छूते ही वे सब पहिले की तरह हो गईं।

"लड़कियों का विवाह हो जाने के बाद कुशनाभ को पुत्र की इच्छा हुई। उसने पुत्रकामेष्ठि यज्ञ किया। उसके एक लड़का हुआ, जिसका नाम गाधि था। जो बड़ा धर्मात्मा था। उस गाधि राजा का लड़का ही मैं हूँ। मेरी एक बहिन थी। उसका नाम था सत्यवती। उसका रुचीक के साथ विवाह हुआ। वह बड़ी पतिव्रता

थी। हम क्योंकि कुशिकवंश के हैं, इसलिए हमें कौशिक भी कहा जाता है। हमारी बहिन के नाम पर कौशिकी नाम की नदी भी निकली। क्योंकि मुझे अपनी बहिन पर अभिमान है, इसीलिए मैं हिम प्रदेश में कौशिकी नदी के किनारे ही रह रहा हूँ। केवल यज्ञ के लिए ही सिद्धाश्रम गया था। बातों बातों में आधी रात गुज़र गई है। राम अब तुम दोनों सो जाओ।"

यात्रा के कारण दोनों ही थक गये थे। वे खूब सोये। वे तब तक न उठे, जब तक विश्वामित्र ने उन्हें उठाया नहीं। नित्यकृत्य से निवृत्त होकर, शोना नदी को उन्होंने भी उसी घाट से पार किया, जहाँ से और पार किया करते थे। वह कोई खास गहरी नदी न थी। बीच बीच में कई जगह रेत के टीले भी थे।

नदी पार करके उन्होंने फिर चलना शुरु किया। दोपहर के समय वे गंगा के तट पर पहुँचे। पवित्र गंगा को देखते ही सब बहुत आनन्दित हुए। वहाँ उन्होंने स्नान किया। देवताओं को तर्पण दिया। पितरों का तर्पण किया। हवन करके भोजन के बाद वे गंगा के किनारे विश्वामित्र के चारों ओर बैठ गये। तब महर्षि ने उनको गंगा का वृत्तान्त सुनाया।

हिमवन्त नाम के पर्वत राजा की दो लड़कियाँ हैं। एक का नाम गंगा और दूसरी का नाम उमा है। उनमें से बड़ी गंगा को देवता पर्वत राजा को मना कर स्वर्ग ले गये। शिव ने उमा से विवाह किया। कालक्रम से सगर के पोते का पोता भगीरथ कठिन तपस्या करके स्वर्ग से गंगा को लाया और उसे पाताल भी ले गया।"

विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण को गंगावतरण की कथा, कुमारस्वामी के जन्म का वृत्तान्त सविस्तार सुनाया। उस दिन रात को सबने गंगा के दक्षिणी तट पर रात बिताई। सवेरा होते ही वे किश्तियों में जिनमें दूब के आसन बिछे हुए थे, नदी पार कर उसके उत्तर तट पर पहुँचे। वहाँ उनको विशाल नगर दिखाई दिया। उस नगर को काफ़ी देर देखने के बाद राम ने विश्वामित्र से पूछा—"महामुनि, इस नगर का परिपालन किस वंश के राजा कर रहे हैं? उनकी क्या कहानी है? मुझे उसे सुनने की इच्छा हो रही है।"

इस प्रश्न के उत्तर में विश्वामित्र ने देव-दानवों के क्षीरसागर के मंथन, उसमें से निकले विष का शिव द्वारा निगल जाना, अमृत का निकलना और उसके लिए देव-दानवों का लड़ना, विष्णु का मोहिनी के रूप में आना और अमृत का ले जाना, अपने विरोधियों को उसका मारना और शरणार्थियों की रक्षा करना आदि के बारे में सविवरण विश्वामित्र ने सुनाया। फिर उसने यों बताया :—

"जब उसके सब लड़के इन्द्र द्वारा मार दिये गये तो दिति ने अपने पति कश्यप के पास जाकर कहा कि मुझे ऐसा पुत्र दो, जो इन्द्र को मार सके।"

"तुमने हज़ार साल श्रद्धा और भक्ति भाव से पवित्र होकर तपस्या की तो तुम्हारे ऐसा लड़का होगा, जो तीनों लोकों को जीतेगा और इन्द्र को मारेगा।" कश्यप ने दिति को वर दिया।

दिति खुश हुई। कुशप्लव नामक स्थल पर कठोर तपस्या प्रारम्भ की। इन्द्र उसके पास आता जाता रहा। वह उसकी भक्तिपूर्वक

सेवा शुश्रूषा किया करता, पानी, समिधायें, दूब, कन्द मूल, फल आदि दिया करता।

नौ सौ नब्बे वर्ष बीत गये और दस सालों में दिति के गर्भ से एक ऐसा लड़का पैदा होनेवाला था, जो इन्द्र को मार सकता था। एक दिन दोपहर को दिति ने इन्द्र से यह कहा—"बेटा, तुम मुझ पर पंखा झल रहे हो, मेरे पैरों की मालिश कर रहे हो, जब मेरे लड़का पैदा होगा, मैं उससे कहूँगा कि वह तुम्हारे साथ मैत्री करे।" कहकर उसने वहाँ पैर रखे, जहाँ सिर रखना चहिए था और वहीं सो गई।

उस समय वह अपवित्र हो गई। इस तरह के अवकाश की प्रतीक्षा इन्द्र कर रहा था। इन्द्र ने तुरत उसके गर्भ में प्रवेश किया। गर्भ में स्थित पिंड को उसने अपने वज्र से सात टुकड़ों में काट दिया। इस प्रकार उसके सात बच्चे हुए, जो देवता के समान थे। वे मारुता कहलाये गये।

"राम, जब दिति यहाँ तपस्या कर रही थी, तो इसी प्रदेश में इन्द्र ने उसकी सेवा की थी। इसके बाद ईक्ष्वाकु महाराजा के विशाल नाम का लड़का पैदा हुआ। उसने ही इस महानगर का निर्माण किया। इसलिए ही इसका नाम विशाला नगर पड़ा। अब इस नगर का परिपालन उसके वंश का सुमति नाम का एक राजा कर रहा है।" विश्वामित्र ने राम से कहा।

इस बीच सुमति को मालूम हुआ कि विश्वामित्र आदि आ रहे थे, वह बन्धु मित्र, पुरोहितों के साथ उनका स्वागत करने आया। विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण का सुमति से परिचय कराया। वे सब सुमति के अतिथि होकर रात को वहीं रहे। अगले दिन उन्होंने मिथिला नगर की ओर प्रस्थान किया।
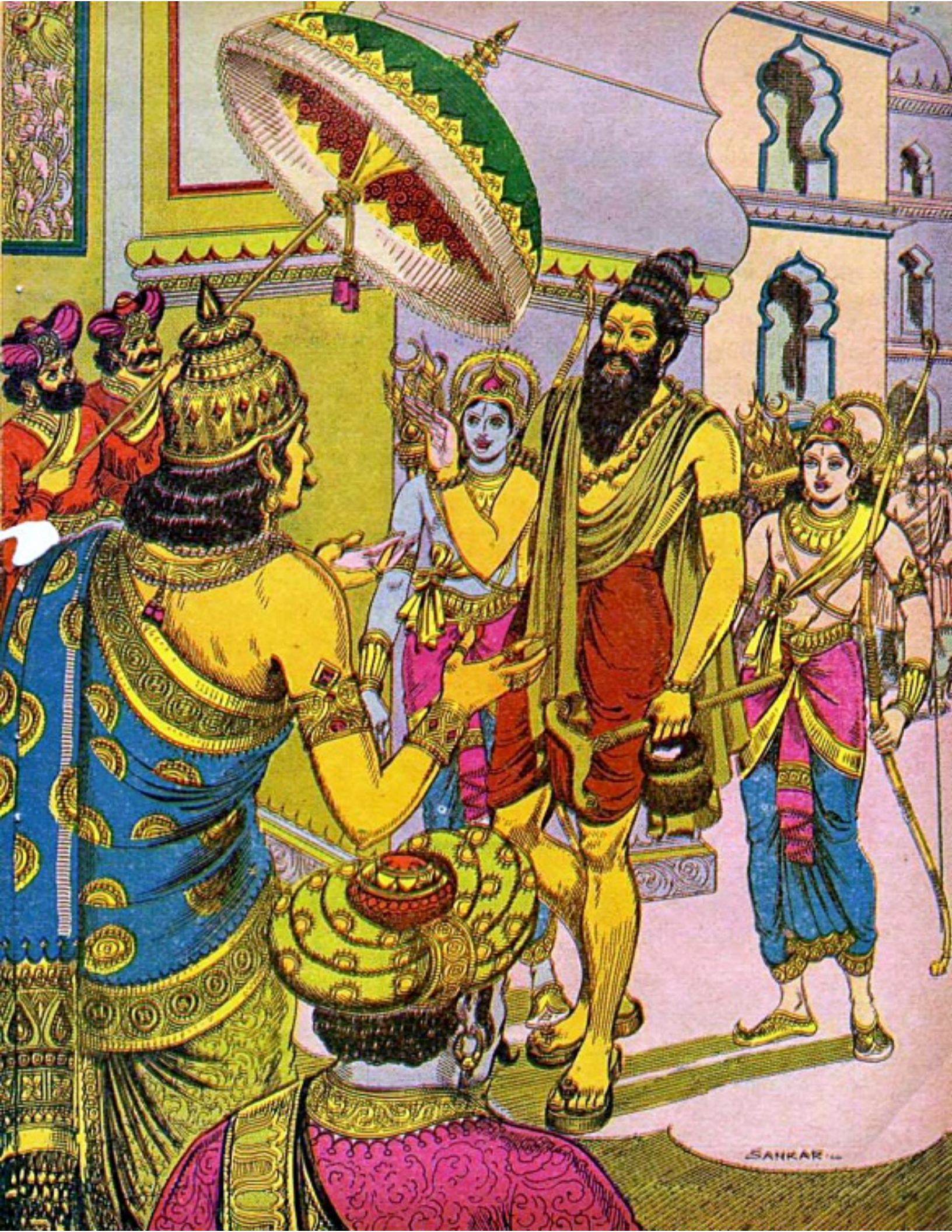
वे मिथिला नगर पहुँचनेवाले थे कि रास्ते में उनको एक उजड़ा मन्दिर दिखाई दिया। वह आश्रम सुन्दर था, पर सूना-सा था। कोई था नहीं। राम ने विश्वामित्र से पूछा, वह क्यों ऐसा था।

एक समय इस आश्रम में गौतम महा मुनि ने अपनी पत्नी अहल्या के साथ कठिन तपस्या की। उसको क्रोध दिलवाकर उसकी तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र, मुनि का वेष धारण करके अहल्या के पास आया, जब कि गौतम स्नान के लिए नदी गये हुए थे। यह जानती हुई कि उस तरह आनेवाला इन्द्र था, उसने उसकी इच्छा पूरी करके भेज दिया। आश्रम से जब इन्द्र जा रहा था, तो उसको गीले कपड़ों में गौतम दिखाई दिया। उसे सब कुछ मालूम हो गया। उसने इन्द्र को शाप दिया। आश्रम में आकर पत्नी को भी शाप दिया। उस शाप के कारण वह सिवाय वायु के किसी आहार के बिना अदृश्य हो, इस आश्रम में समाधिस्थ हो गई। क्योंकि गौतम ने कहा था कि तुम्हें देखते ही वह शाप मुक्त हो जायेगी, इसलिए चलो, इस आश्रम में चलें। हम ऐसा करें कि वह अहल्या सब को दिखाई देने लगे।" विश्वामित्र ने कहा।

जब वे अन्दर गये तो राम की आँखों को सूर्य की कान्ति-सी मोहिनी देवता-सी सुन्दर अहल्या दिखाई दी। जब उसने राम को देखा तो और भी उसको देखने लगे।

राम लक्ष्मण ने उसके पैर छुये। पति की बात याद करके अहल्या ने राम लक्ष्मण के पैर धोये, अर्घ्य-नैवेद्य आदि, दिया। उस समय गौतम भी वापिस आ गया।

विश्वामित्र वहाँ से चलकर, राम लक्ष्मण को लेकर मिथिला नगर में पहुँचा।

(अभी है)

हमारे देश के आश्चर्यः

मदुरा मीनाक्षी का मंदिर

मदुरा मीनाक्षी का मन्दिर, भारत के प्रसिद्ध मन्दिरों में एक है। इसमें द्राविड़ स्थापत्य कला और शिल्प कला दृष्टि गोचर होती है।

इस मन्दिर के चारों ओर ऊँचे ऊँचे गोपुर हैं। मन्दिर का मुख्य द्वार पूर्व की ओर है।

मन्दिर के प्राकार के अन्दर दो गर्भालय हैं— एक मीनाक्षी का और दूसरा पति सुन्दरेश्वर का।

यहाँ शिव का नाम सुन्दरेश्वर है।

मन्दिर के सामने एक मण्डप है। यहाँ स्तम्भों पर शिव लीला चित्रित है। इस में ९८५ स्तम्भ हैं। बड़ा विचित्र और आकर्षक है इसका निर्माण। इसका निर्माण १५६० में हुआ था। कई स्तम्भों पर बहुत ही सुन्दर शिल्प है।

मण्डप की बाहर की पंक्ति में स्वर स्तम्भ है। इन स्तम्भों पर चोट करने से एक एक स्तम्भ से एक एक आवाज होती है।

मन्दिर के बाहर पूर्व की ओर वसन्त मण्डप है। इस मण्डप में नायक राजाओं की सुन्दर प्रतिमायें हैं।

विजयनगर से सम्बन्धित नायक राजाओं ने १७ वी शताब्दी में इस नगर की बहुत अभिवृद्धि की। इनसे पूर्व, १४ वी शताब्दी तक मदुरा पर पान्ड्य राजा शासन करते थे। यह पुण्य क्षेत्र ही नहीं, अपितु तमिल साहित्य का एक बड़ा केन्द्र भी है। कभी यहाँ तालाब में ग्रन्थ फेंके जाते, यदि वे तैर उठते तो उनको बड़ा ग्रन्थ समझा जाता।
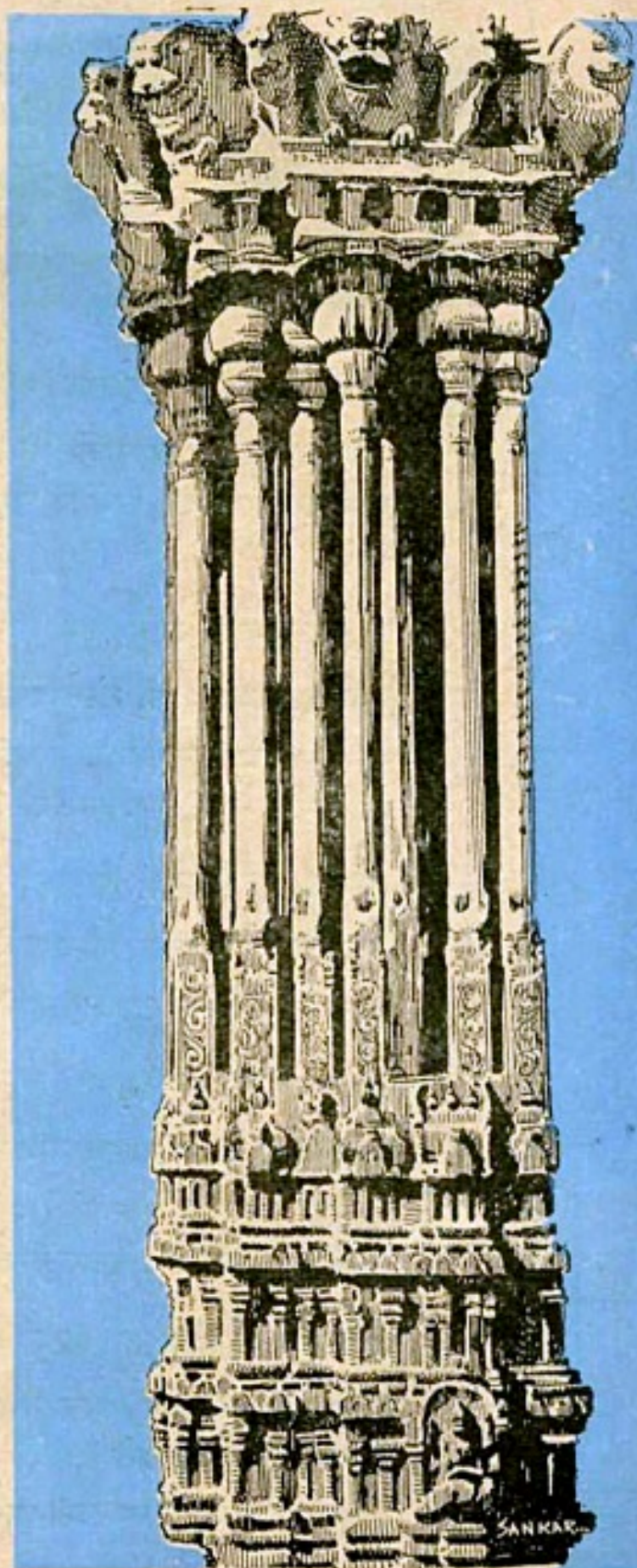
१. **नारायण प्रसाद अग्रवाल, राँची**

क्या आप अन्य भाषाओं की "चन्दामामा" में भी प्रश्नोत्तर, चित्रकथा और बेताल कथा, इत्यादि छापते हैं ?

जी हाँ।

२. **रवीन्द्र कुमार, भागलपुर**

"चन्दामामा" की लोकप्रियता के क्या कारण है ?

यह तो पाठक ही जानते हैं, आपको जिसलिए यह पसन्द है, शायद औरों को भी इसीलिए पसन्द है, प्रयत्न हम करते हैं, और प्रियता आप देते हैं।

३. **उन्दलदास सिन्धी, तुमसर**

क्या आप "भयंकर घाटी" के बाद "विचित्र जुड़वा" आरम्भ करेंगे ?

जी नहीं। "विचित्र जुड़वा" पहिले हम प्रकाशित कर चुके हैं।

४. **शं. ला. सोनी, खंड़वा**

क्या आप अपने परिचय के ही पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देते हैं ?

जी नहीं। प्रश्नों के उत्तर देते हैं, परिचितों के नहीं, प्रश्न उचित होगा, तो उत्तर दिया जायेगा, प्रश्न कर्ताओं से हमारा वैय्यक्तिक परिचय नहीं है।

५. **हेमन्तप्रसाद दीक्षित, कटनी**

"चन्दामामा" में आप पहिले की भाँति समाचार का एक स्तम्भ अब क्यों नहीं खोलते ?

स्थान के अभाव के कारण, कभी पृष्ठ बढ़ेंगे, तो समाचार देने का भी प्रयत्न करेंगे।

६. जुगलकिशोर अग्रवाल, जलगाँव

"धूमकेतु" कौन से अंक से शुरू हुआ और कौन से अंक में समाप्त हुआ?

"धूमकेतु" धरावाहिक फरवरी १९५४ में शुरु हुआ और जुलाई १९५५ में समाप्त हुआ।

७. गुलशन राय तेनजा, नई दिल्ली

क्या आप "चालाक माँ बेटी" "सिन्दबाद की यात्रायें" "प्रकृति के आश्चर्य" आदि श्रेणी की कुछ अन्य रचनायें प्रकाशित नहीं कर सकते?

"सिन्दबाद की यात्रायें" प्रकाशित हो चुकी हैं। इस श्रेणी की रचनायें हम प्रायः देते आये हैं।

आपने एक भाई के प्रश्न के उत्तर में कहा था कि अंग्रेजी में आये प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी में ही देंगे? इसका क्या अर्थ हुआ? अंग्रेजी में तो चन्दामामा प्रकाशित होता ही नहीं।

हमारा मतलब अंग्रेजी पत्रों से था। प्रश्नों से नहीं।

८. अभयकुमार सूद, जयपुर

क्या आप रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानियाँ छाप सकते हैं?

छापना तो जरूर चाहते हैं।

९. करणसिंह मंगलराम, मारवाड़ जंक्शन

क्या "चन्दामामा" गुजराती में भी प्रकाशित होता है?

हाँ, होता है।

१०. सन्तोषकुमार अग्रवाल, करीमपुर

क्या "चन्दामामा" का प्रकाशन मद्रास के सिवाय और कहीं होता है?

नहीं तो।

अन्तिम पृष्ठ

कर्ण के गिरते ही पाण्डव सैनिक, कृष्ण और अर्जुन शंख बजाने लगे। एक दूसरे का आलिंगन करके शोर करने लगे। कौरव योद्धा एक एक करके आये और कर्ण का शव देखकर दुखी होने लगे। भीम शेर की तरह गरजकर भयंकर नृत्य करने लगा।

दुर्योधन अपने योद्धाओं को भयभीत देख स्वयं पाण्डव योद्धाओं से लड़ने लगा। शल्य ने कहा—"विधि का यही निर्णय है। क्या किया जा सकता है। सूर्यास्त होने जा रहा है। आज का युद्ध समाप्त करके, चलो, शिबिर चलें।"

कृष्ण ओर अर्जुन ने जब जाकर युधिष्ठिर को बताया कि कर्ण मारा गया था, तो वह स्वयं युद्ध भूमि में कर्ण को देखने आया।

कृप ने दुर्योधन के पास आकर कहा—"जिनके लिए हमने विजय चाही थी, वे सब मर गये हैं। कम से कम अभी सन्धि कर लेना अच्छा है।" दुर्योधन ने उससे कहा—सन्धि से हमें क्या मिलेगा? न सुख मिलेगा। न राज्य ही। इससे तो अच्छा यही है कि हम अन्त तक लड़कर वीर स्वर्ग प्राप्त करें।"

कर्ण मारा गया था—इसलिए नये सेनापति की आवश्यकता थी। अश्वत्थामा से जब इस बारे में पूछा गया, तो उसने शल्य की ओर सूचित किया। शल्य मान गया। उस दिन रात को कौरव सो रहे। अगले दिन शल्य को सेनापति के रूप में अभिषिक्त किया गया, वे अन्तिम दिन के युद्ध के लिए निकल पड़े। युद्ध के आरम्भ होते ही नकुल ने कर्ण के लड़के, चित्रसेन, सुशर्मा, सत्यसेन आदि को मार दिया। शल्य ने भयंकर युद्ध किया। एक बार उस में और भीम के बीच गदा युद्ध हुआ। दोनों मूर्छित हो गये। इससे पहिले कि भीम को होश आया कृप आकर—शल्य को अपने रथ में बिठाकर ले गया।

फिर शल्य ने अपना आखिरी युद्ध युधिष्ठिर से किया। इस युद्ध में युधिष्ठिर ने शल्य पर एक शक्ति का उपयोग किया। शल्य मर गया। शल्य के मरते ही उसका एक भाई युधिष्ठिर से लड़ा और उसके हाथ मारा गया। तब तक दोपहर हो गई थी। कौरव सेना में हाहाकार प्रारम्भ हो गया था। सेना तितर बितर होकर भागने लगी। सात्यकी उस सेना का पीछा करता, उसका नाश करने लगा। कृतवर्मा ने उसका सामना किया, परन्तु हारा गया।

इतने में कौरव यौद्धाओं में एक जिसका नाम साख था जोर शोर से लड़ता आया, सात्यकी से उसने युद्ध किया और मारा गया। जो योद्धा दोनों तरफ बच गये थे, वे आपस में भिड़ पड़े। दुर्योधन ने इस युद्ध में बड़ा पराक्रम दिखाया।

शकुनि अपनी सेना को लेकर पाण्डवों को पीछे की तरफ से हराने की कोशिश करने लगा। यह जान सहदेवने कुछ सेना लेकर उस पर आक्रमण किया। दो घड़ी युद्ध होता रहा, शकुनि मारा गया। और जो बचे गये थे, वे युद्ध भूमि से भाग गये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

नवम्बर १९६१ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७ सितम्बर '६१ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता,
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

सितम्बर – प्रतियोगिता – फल

सितम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **रोकने में व्यस्त !**
दूसरा फ़ोटो : **चलने में मस्त !!**

प्रेषक : **महेन्द्र भंडारी,**
C/o एस्. सी. भंडारी, खराडियन स्ट्रीट, जोधपुर

चित्र-कथा
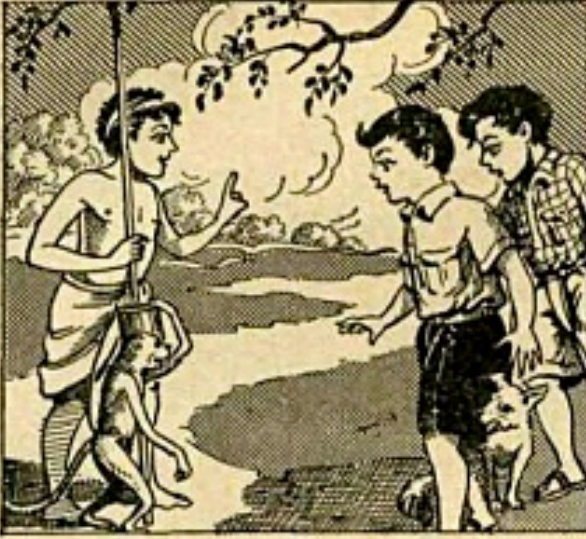
एक रोज़ दास और वास के पास गड़रिया लड़का एक बन्दर लेकर आया। "एक कम्बल देकर, मैंने इसे एक जादूगर से खरीदा है। देखो, अब इससे कितने तमाशा दिखाता हूँ।" कहकर उसने बन्दर को अपनी लाठी दिखाई। उससे कहा—"इसके ऊपर कूदकर बैठो।" बन्दर लाठी पर जा बैठा। टाइगर ने इतने में जाकर बन्दर की पूँछ काटी। बन्दर लाठी लेकर भागा "अरे मेरा बन्दर, मेरी लाठी।" गड़रिया पीछे भागा। दास और वास हँसे।

Printed by B. NAGI REDDI for the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'
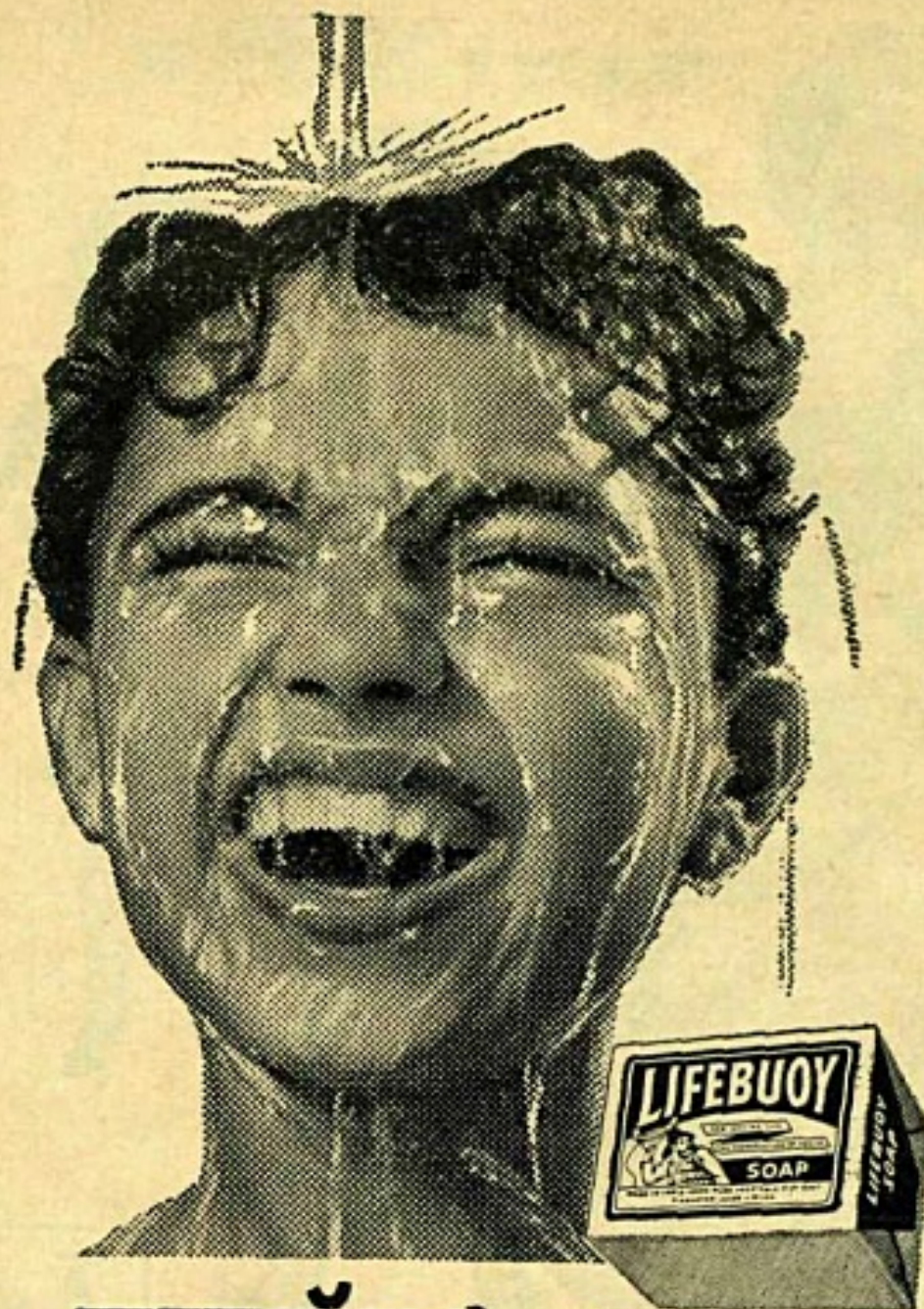
लाइफ़बॉय है जहां,
तन्दुरुस्ती है वहां!

लाइफ़बॉय से नहाने का आनन्द ही अनोखा है!
ऐसी ताज़गी मिलती है कि तबीअत खिल उठती है।

आप काम-काज में लगे हों या खेल-कूद में, गन्दगी से नहीं बच सकते। लाइफ़बॉय का भरपूर झाग गन्दगी में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है और आपकी तन्दुरुस्ती की रक्षा करता है। आज ही से घर भर की तन्दुरुस्ती के लिए लाइफ़बॉय इस्तेमाल कीजिये।

L. 16-X29 HI

हिन्दुस्तान लीवर का उत्पादन

"...मैं बराबर शान्ति को उनका केसमेन्ट पहनाती हूँ—स्कूल की यही सिफारिश है—उनके फ्राक और स्कर्ट के लिये इससे अच्छी चीज मिल ही नहीं सकती—और उसके ब्लाउज के लिये मैं लेती हूँ उनका क्रेप एफ. एस १०५—और मोहन के लिये—अजी, उनका तसर ही होना चाहिये—सचमुच लाजवाब है..."

अपनी ज़रूरत के मुताबिक बिन्नी के कपड़े नियंत्रित मूल्य में बिन्नी के अधिकारप्राप्त स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनके यहाँ यह साइन बोर्ड लगा है।

दि बकिंघम ऐण्ड कर्नाटक कम्पनी लिमिटेड
बिन्नी ऐण्ड कं० (मद्रास) लिमिटेड की सहायताप्राप्त

JWTBC/SR 1306A

चन्दामामा

(लोकप्रिय पत्र, अगणित पाठक)

अब ६ भाषाओं में प्रकाशित होता है।

हिन्दी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु और कन्नड़

प्रति मास २,१७,००० घरों में पहुँचता है।

आप अपनी पसन्द के माध्यम द्वारा अपनी बिक्री का संदेश प्रत्येक परिवार को भेज सकते हैं।

दाम एक प्रति	सालाना चंदा
५० नये पैसे	६-०० रुपया

विवरण के लिए लिखें :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, मद्रास-२६.

आसान किस्तों में लीजिये

अतिरिक्त मूल्य भी नहीं ..

- यह सुयोग थोड़े दिनों के लिये है
- याद रखें: **उषा** के सभी पंखों में डबल बॉल-बेयरिंग लगे रहने के कारण इसका टिकाऊपन बढ़ गया है।
- सौदे के लिये अपने निकटस्थ **उषा** पंखा विक्रेता से मिलें।

आज ही बाजार की सर्वाधिक जनप्रिय पंखे खरीदें

जय इंजिनीयरिंग वर्क्स लिमिटेड, कलकत्ता-३१

JE-47-HIN

AMARJOTHI
FABRICS

अमरज्योति फेब्रिक्स

हातकरघे के बेडशीटस् के लिए मशहूर है

बेडशीटस्, पर्दों के कापड, तौलिये आदि

संसार में सर्वत्र इनका निर्यात होता है

शाखाएँ:

बम्बई,
दिल्ली,
मद्रास।

निर्माता: अमर ज्योति फेब्रिक्स
पो. बोक्स नं. २२, कारूर (दक्षिण भारत)

मद्रास की गवर्नमेन्ट से प्रथम पुरस्कार प्राप्त

भारत में सबसे ज्यादा बिकता है...

लॅको-बॉन-बॉन्

सिर्फ **रावलगाँव** ही बनाते हैं।

Ravalgaon

सेलिंग एजन्टस्: मे. मोतीलाल गिरधारीलाल आधारकर, मालेगांव, जि. नासिक

बसंती
LUX
Yellow
हरा
LUX
नीला
LUX
Blue
गुलाबी
LUX
'मेरा मनपसंद
लक्स
इंद्रधनुष के
चार रंगों में
और सफ़ेद भी!'
वहीदा रहमान
कहती हैं
LTS. 81-X29 HI
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

झंझट बिना लेन-देन

मेट्रिक बाटों का प्रयोग शुरू हो चुका है। अब कीमतें मेट्रिक इकाइयों के अनुसार तय हो गयी हैं। पर फिर भी बाजार में लेन देन करते समय कई बार झंझट का सामना करना पड़ता है। जानते हैं आप क्यों ?

इसका कारण यह है कि अभी मेट्रिक प्रणाली की भावना नहीं अपनाई गयी है। वस्तुएँ खरीदते समय या तो पुराने तोल के हिसाब से अथवा पुराने तोल के बराबर मेट्रिक तोल के अनुसार चीजें खरीदी जाती हैं।

जैसे कि एक पाव के लिए २३३ ग्राम और १ पौण्ड के लिए ४५४ ग्राम।

इस ढंग से मेट्रिक प्रणाली का लाभ सब तक नहीं पहुँचता।

ठीक तरीका तो यह है कि २०० या ३०० ग्राम अथवा ४०० या ५०० ग्राम चीज खरीदी जाय।

इस ढंग से नयी प्रणाली का पूरा लाभ मिलेगा। दाशमिक सिक्के शुरू हो जाने के कारण अब सब लोग यदि इसी तरह पूर्ण मेट्रिक इकाइयों में सामान खरीदें तो तुलाई और हिसाब में बड़ी सहूलियत होगी और कोई झगड़ा या झंझट नहीं होगा।

पूर्ण मेट्रिक इकाइयों में ही चीजें खरीदिये

इसमें आप और

दूकानदार दोनों की सुविधा है

भारत सरकार द्वारा प्रचारित

DA 61/108

Photo by Madan Gopal
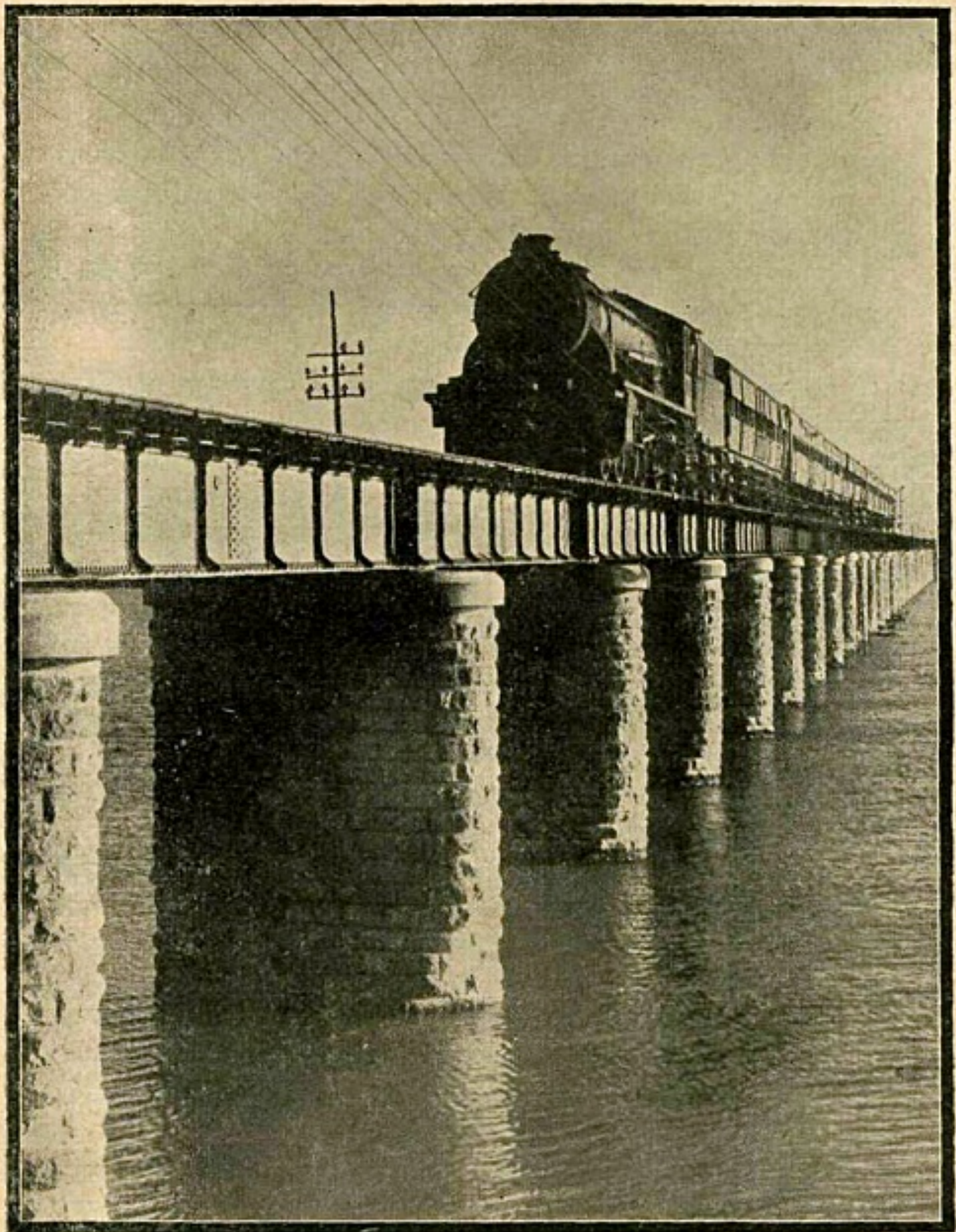
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

चलने में मस्त!!

प्रेषक :
महेन्द्र भंडारी - जोधपुर

CHANDAMAMA (Hindi) SEPTEMBER 1961 Regd. No M. 5432

महाभारत